



संसाहित्य प्रकाशन

# नव-प्रभात

[संशोधनात्मक ऐतिहासिक नाटक]

विष्णु प्रभाकर

१९६०

संसा साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक  
मार्तण्ड उपाध्याय  
मंत्री सत्ता साहित्य मंडल  
नई दिल्ली

---

---

आठवीं बार : १९९

मूल्य

एक रुपया

---

---

मुद्रक

बालकृष्ण लाल

मुद्रास्तर प्रेम

इन्दिरा पुन रिम्प

युद्ध से त्रस्त  
थोखयी गयी  
की  
मानवता  
को



## आमुग

इस नाटक के निर्मित होने का एक इतिहास है। मुझे इतिहास से प्रेम है, परंतु फिर भी उसकी बयाबस्तु को लेकर मैंने धापर ही कोई कहानी या एकांकी लिखा हो। वर्तमान युग में ही निराने के लिए इनकी मायबी है कि भूतकाल की धीर ध्यान नहीं जाना। धाम का पुन माया कि रचनाओं की मांग करता है। धाम की समस्या को सुनमाना बाह्य है धीर उसकी दनि इनकी है। कि रचकर पीछे बेगने का धरना ही नहीं मिलता। फिर भी यह नाटक लिखा गया।

गगन बर्ष आकाशवाणी के हिन्दी स्टेशन के नारी-विभाग में रेडियो-कर्मियों का एक कम शुरू किया गया था। उसका लोचन था— मैं भी मानव हूँ और उसका उद्देश्य पुरातन इतिहास के सुनिश्चित धर्मियों को जीवन प्रीति देने हुए, यह बजाना था कि उन्होंने कुछ भी नहीं न किया हो वे से मानव। 'आर्गो' उन धर्मियों में सर्वप्रथम का धीर उमरर शुरू लिखा था। इस नाटक का प्रथम संस्करण अभी नहीं है जो मैंने हिन्दी रेडियो के लिए लिखा था। बर्षों में यह धनेक बार प्रसारित हो चुका है।

कुछ दिन बाद आकाशवाणी के उस विभाग में जहाँ मैं भारत के अनिरुद्ध धर्म देवी के लिए कार्यक्रम प्रगति होते हैं। एक धीर कम शुरू हुआ। उसका लोचन था— 'इतिहास का एक पृष्ठ'। उनमें भारत के इतिहास की कुछ गौरवशाली कहानियों की प्रीति ही जानी थी। उनके लिए मैंने अपनी नारी में 'आर्गो' को बना धीर देशाभ्यास के नाम से एक रेडियो करक लिखा। उनमें दिखाया गया था कि आकाश 'धर्म निरिधा' लिखा था है धीर धनेक जीवन की कहानियों को धर करता

जाठा है। दूसरे धंक की कथा उसी रूपक से की गई है। एक प्रस्तावना में ये शब्द पाठे हैं—“जहाँ लोगों का इस प्रकार बच सरल और देश निवासा हो ऐसा जीवन न जीतने के बराबर है।” इन शब्दों को धोतते धोतते अयोध की कनिम-मुठ की याद आ जाती है और उस बात काटा है कि ये शब्द कनिम की राजकुमारी में बहते थे। इतिहास में इस बात की कथा नहीं पायी। या भी नहीं सकती। राजकुमारी मेरी बत्पना की सृष्टि है पर यह सई बत्पना नहीं है। पहले भी कुछ मोछन ऐसी बत्पना कर चुके हैं। श्री जगदीशचन्द्र माधुर ने एकांकी ‘जय-मराजम’<sup>१</sup> में यह राजकुमारी उपस्थित है यद्यपि संसार के मनुष्यों की भांति मेरी और उनकी बत्पना-सृष्टि में अंतर है। कनिम-मुठ के बाद अयोध के जीवन में जो महात्मा परिवर्तन हुआ उसके लिए निस्सन्देह कुछ प्रबल कारण रहे होंगे। कुछ ऐसी घटनाएँ घटी होंगी कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई होंगी कि जिन्होंने अयोध के हृदय पर प्रबल आघात किये होने और उसे मुठ से घुणा हो गई होगी। मैं राजकुमारी की सृष्टि इसी दृष्टि से की है।

तीसरे धंक में जो कहानी है वह हम दृष्टिकोण का चरम-बिंदु है। बिना हम प्रकार के प्रबल आघात के अयोध के हृदय में इतना बहन समर्प नहीं मचा होगा जो भारत के इतिहास को पकट है। यह धंक मेरी कहानी ‘जीवन-बीज’ का अन्तर्गम है। दिल्ली की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था ‘समिन्धार-मन्दाय’ में मैंने इस कहानी को पढ़ा था। हम वर अन्धरी कथा हुई थी। कुछ लोगों का कुमार की आत्महत्या पर आशंका थी। कुमार की बत्पना कोई नई बत्पना नहीं है परंतु अधिपति ने उसकी मे उसे का तो कनिम-मुठ में बीरनापूर्वक लड़ने-लड़ते प्राण देन विवित किया है या कुछा के कारण अयोध द्वारा उनको अत्यु-बंध दिलाया है परंतु मैंने अयोध द्वारा अत्यु-बंध दिलाकर दिलाया है कि परचाताप के कारण अयोध राजकुमार को फिर लया न देता है लेकिन राजकुमार लम्बाद अयोध की लया कहना नहीं करना और अन्धकार बाहर आयातना कर

<sup>१</sup> यह एकांकी की श्रुतिना हम की बात मीरिन ‘अपान’ में प्रकाशित हुआ था।

मेना है। उसकी धारम-तरा का उद्देश्य कायरता नहीं है बल्कि धर्मोक्त  
 का हृदय में परचासाप की जो धार सुमयने लगी है, उसे ठेक करना है।  
 यह कल्पना भी मूल में घेरी नहीं है। उदिया की मेतिका भीमती  
 सरस्वतीस्त्री पाणिघाटी के नाटक 'अभिग-विजय' में यही कल्पना की  
 गई है। हां उग बलाका का उद्देश्य मेरे उद्देश्य से कुछ भिन्न है। इस  
 प्रकार राजकुमार की धारम-तरा की कल्पना सोई रूप है। यह इतिहास की  
 दृष्टि से धर्मय प्रमाणित हो सकती है परन्तु धारमय प्रमाणित नहीं हो  
 सकती। इतिहास की कल्पनाओं को ठोहने-मरोड़ने धरका उसके मनमाने  
 धर्म लपाने का हम अधिकार नहीं है परन्तु परिस्थितियों के अनुसार उचित  
 कल्पना करने का अधिकार धरम्य है। हां इस प्रकार की कल्पना से  
 ऐतिहासिक साप को हम भिन्नता जाति। इस कल्पना से धर्मोक्त की  
 हृदय-परिवर्तन की ऐतिहासिक घटना को संश्लेषित बन भिन्नता है। उगे धर्मो  
 वाचकिक सति के गोरनेपन का पना लपना है।

एक और नई कल्पना इस नाटक में की गई है। साधारणतया मईद  
 और संपमिता धर्मोक्त के पुत्र और पुत्री प्रविष्ट हैं परन्तु मैं उन्हें धर्मोक्त  
 के भाई-बहन बनाया है। धर्मोक्त के परिवार के बारे में इतिहास निबिबाद  
 रूप में कुछ नहीं बताया। जन-श्रुतियों कापाधा तथा बारन और मंडा  
 के बीच-समी के साधार पर ही इतिहासकारों तथा दूसरे लेखकों ने उसका  
 निबिबाद दिया है। 'दिभ्यावदान' तथा 'महावंश' उनमें प्रमुख हैं धर्मोक्त  
 के पिता-लेगो लज-नेगो तथा मुश-लेगो ने उनके धर्म भाई-बहनों  
 राजीनों और पुत्र-पुत्रियों के होने का पता लगता है परन्तु नाम एक-दो  
 ही के पाए हैं। उदाहरण के लिए 'महावंश' के अनुसार धर्ममिषा  
 धर्मोक्त की प्रपल राजी थी। इसके अनुसार एक राजी विमला नाम  
 'देवी' का उज्जैन में राजी थी मईद और संपमिता उगकी मंगल से।  
 'दिभ्यावदान' (वृत् १६७-१८) मम्राद की एक राजी का नाम जिप्प  
 रतिता बताया है। कदा धानी है कि इन राजी में मम्राद ने बुझावे में  
 विवाह किया का और उनके मंदर पुत्र मुग्गाय की धर्मो इसी राजी के



निकलवाई थीं। शाक्य कुमारी और पद्मावती भी असोक की छनियाँ बताई जाती हैं। पद्मावती का नाम बाबाधों में आता है और यह कुण्डल की माता बताई गई है। कहीं-कहीं कुण्डल की माता का नाम अर्द्धांगिणी भी आता है, परंतु बीच स्तम्भ-मैल (अनुपम) में जिस छनी का नाम आता है वह 'काश्याकी' है।

"देवामाम्प्रिय कं अनुगासन ते सर्वत्र महामात्रों को यह कहा जाय कि वहाँ जो कुछ भी बात द्वितीय छनी में किये हों—चाहे आमकुंज चाहे अमरपाला चाहे अन्य कुछ, सबकी गणना छनी के नाम किये जाय। यह द्वितीय छनी काश्याकी त्रिपाला की माता की निमग्न है।"

मैंने अपने नाटक में 'द्वितीय छनी काश्याकी' को लिया है। संभवतः यह छनी असोक को विशेष प्रिय थी। इसी सेग में काश्याकी के पुत्र त्रिपाला का नाम भी आया है। इन पुत्र के अतिरिक्त महेंद्र उज्जैनो कुण्डल और कामिका भी असोक के पुत्र बताये गए हैं। हमें यहाँ महेंद्र की चर्चा करनी है क्योंकि उसके अतिरिक्त और किसी का संबंध हम नाटक में नहीं है। "उत्तरी बीड़ अनुपम महेंद्र को असोक का भाई कहती है पर मिहनी वृत्तान्तों के अनुसार वह उष्ण पुत्र था।" (भारतीय इतिहास की रूप रेखा जयचंद्र बिद्यालंकार भाग २ पृष्ठ ४ प्रकरण १६ १३६ अ पृष्ठ ६७)। मिहनी वृत्तान्त से तात्पर्य 'महावंश' में है। यह गिना जा चुका है कि उनके वृत्तान्त अत्यंत भ्रमे ही में हैं। परंतु वे अनिवार्य रूप से अतिरिक्त हैं। बीड़पर्व का असोक पर क्या प्रभाव पड़ा यह बताने के लिए उन प्रारंभिक जीवन में बड़ा कर विहित किया गया है। लिया गया है कि घरने ११ भाइयों की हत्या करके असोक घरी पर बैठा था। अब यह निश्चय हो चुका है कि ऐसी कोई बात नहीं थी। हाँ केवल एक भाई ने उनका भगदा हुआ था। वह उत्तरा जीनना बड़ा भाई सुमीय था। संभवतः वह रिता का भाइया या या

१ कुछ विद्वानों का मत है कि वह काश्याकी पुत्र या दास या भ्राता है।

२ आम्बिक का भी राज के अनुसार अक्षय्य नाम नहीं दिया गया।

३ कही टीका ३६।

दासद बीड़-धर्म के प्रति कथान होने के कारण बहुमगध की राजगढ़ी पर बैठने योग्य नहीं समझा गया। कुछ भी हो इसी एक भाई में घणोर का भ्रमड़ा हुआ था। उसके दोष भाई उसके राज्यपाल में उपस्थित थे। सातवें स्तंभ तैय में भिगा है—

“यहां (पाटलिपुत्र) घोर बाहर के मेरे धरतीलों में के महामात्रगण बिबिध भाति के कई आनंद बैनपाल भावों में लगे हैं तथा पुष्य भावी की बड़गी के हेतु घोर चर्मातुष्टि के लिए मैंने आदेश किया है के रातियों के घोर मेरे अतिरिक्त घोर मेरे पुत्रों घोर अन्य देवी-कुमारों के दान कार्य के लिए नियत किये जायें।

भी भगवतीप्रसाद पावरी न अपनी पुस्तक ‘घणोर’ में इस वेग पर टिप्पणी करते हुए लिखा है—“इस संदर्भ के ‘देवीकुमारों’ को घणोर की रातियों के पूत्र न समझे जाना चाहिए यद्यपि ये देवीकुमार घणोर के पिता की रातिया अथवा देविया के पुत्र थे—अर्थात् ये कुमार घणोर के मोतेरे भाई थे।”

पांचव प्रधान मिनामेर में यह बात घोर की स्पष्ट रूप में बही गई है।

“ये (धर्म महामात्र) यज्ञ (अथवा पाटलिपुत्र) तथा बाह्य दूरस्थ नगरों में मेरे तथा भाइयों घोर बहनों के अंत-पुर घोर मेरे अन्य संबंधियों के यज्ञ संबंध नियुक्त हैं।

यही नहीं मायाघो के अनुसार घणोर अपने माह-बाहनों के प्रति बड़ा उदार घोर हुआ था। वह उन्हें बल स्नेह करता था बिद्येयक घण्डे को लेकर, उनके स्नेह की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। एक माया के आगा है कि यज्ञ घणोर का मोनेमा भाई का घोर बड़ा कर, संभव हीन घोर समर्पित था। घणोर ने उसे कुमाया घोर भाई के स्नेह तथा पिता के प्रेम की पार हिमाकर गममाया। महद में आगा घणोर स्वीकार कर लिया घोर धर्म में वह ‘अच्छत’ हुआ। संप्राद के घण्डे के करने के लिए पाटलिपुत्र में बाह्य पुराण प्रदान को। प्रसिद्ध चीनी यात्री

१ इ. ७२६ (अब की इस स्थिति का अक्षर EP Indica li 276 है।)

२ इ. १० घणोर—आर्यभट्ट संक्षेपः।

फ्राडियान के अनुसार अशोक का भाई पहाड़ी पर एकान्तवास दिया करता था। सम्राट चाहते थे कि वह राजशासन में आकर रहे, किन्तु वह नहीं आया। मग्न सम्राट ने पाटलिपुत्र के पास ही उसका रहने में लिए एक पुष्प बनवा दी। यद्यपि फ्राडियान ने इस भाई का नाम नहीं दिया है तथापि संभवतः यह उल्लेखित भाई ही है। समुद्रमंथन (कुरुक्षेत्र) में भी महद्र को अशोक का विमातृज भाई लिखा है और इसी कथा का विस्तार में वर्णन दिया है।<sup>१</sup> अन्य जगहों में महद्र की कथा हमारे हम पर भी गई है। पाभीसंघों में उसे निष्य कहा गया है 'निष्यावदान' में विजयमोक लिखा है और कुछ चीनी ग्रन्थ उसे गुर्दन और मुनाम भी कहते हैं।

जो इस उल्लेखित उद्धरणों में यह स्पष्ट है कि महेंद्र अशोक का भाई था। वह सीमाता था और बीड़ भी हो गया था। कुछ विद्वान् मानते हैं कि एक महेंद्र अशोक का पुत्र भी था। कुछ किसी निश्चय पर नहीं पहुँचते। 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' में भी अपभ्रंश विद्यालकार ने श्री अनिरुद्ध नाम लिखी है—“असीति बुरी होने पर निम्न में अनेक प्रारंभ देखों २ बीड़ नामने कुरुक्षेत्र को प्रचारण विद्यालयों के वर्ग भवे। अशोक का प्रवृत्ति बेटा या भाई महेंद्र (महेंद्र) भी उनमें से एक वर्ग का नेता था।”

ऐसी अनिश्चित परिस्थिति में मैं महद्र को अशोक का भाई माना है और इस सम्बन्ध का आधार उत्तरी बीड़-ग्रन्थ है। इसी ग्रन्थ के आधार पर मैं अशोक के धर्मगुरु का नाम उरगुण दिया है। बड़ी-बड़ी निम्न नाम भी आता है। संभवतः ये दोनों एक ही व्यक्ति थे। मैंने तो बड़ी कुछ और जगहों में भी महेंद्र को भाई स्वीकार दिया है और महेंद्र को भाई मानने पर सम्बन्धिता स्पष्ट ही अशोक की बहन बन

१ SI Yuki Volume II II 91 'अशोक' पृष्ठ १२ व १४ प।

२ कुरुक्षेत्र का प्रवृत्ति-ग्रन्थ।

३ अशोक—१ व २ पृष्ठ १२ व १४।

४ पृष्ठ २ व ३ व पृष्ठ १३ व १४ व. पृष्ठ ११२।

५ पृष्ठ १३ व १४ व की पृष्ठ ११२ पृष्ठ ११२।

## धामुरा

जाती है क्योंकि इस बात पर सब एकमत है कि मर्यादा बहुत ही बहन  
 सी। मर्यादा का धारा की बहुत मानने का एक और भी कारण है।  
 'महाबल' के अनुसार त्रिमय महेंद्र और मर्यादा को धारक का पुत्र-पुत्री  
 माना है मर्यादा का बिबाह हो चुका था। उस वृत्ति का नाम धर्मिप्रसा  
 तथा पुत्र का नाम सुमन था। धर्मिप्रसा और सुमन के बारे में धर्मिप्रसा  
 जाती है और निधिया का नाम चोटामा है कि कुछ भी बिबिध बनने को  
 जी नहीं चाहता। 'महाबल' में लिखा है कि मर्यादा ५६ वर्ष तथा मे  
 रही। सुमन के समय 'सी' धर्म्य में ब्रह्मदेव स्थान पर विना है कि मर्यादा  
 धारक के धर्मिप्रसा १८ वर्ष का हुई (महाबल प्रकरण २ का)।  
 इसका अनुसार कनिय-मुद्र के समय उसकी आयु १ वर्ष की थी क्योंकि  
 कनिय-मुद्र धर्मिप्रसा के ८ वर्ष बाद हुआ। 'महाबल' के अनुसार ही  
 निराणी ब्रह्मदेव समय मर्यादा की आयु १८ वर्ष की थी और वह  
 धर्मिप्रसा के ८ वर्ष के बाद प्रविष्ट हुई जो धर्मिप्रसा कनिय-मुद्र के ८ वर्ष  
 पूर्व (महाबल प्रकरण ५ का) जो गाथाएँ नाम्ना के अनुसार दीव  
 नहीं है क्योंकि यह से पूर्व धारक बाह्यलक्ष्य का अनुपायी या पर यदि  
 इस बात की दीव मान भी लेता तो इसके अनुसार पुत्र के समय मर्यादा  
 की आयु बीस वर्ष की जाती है। 'इस स्पष्ट है कि 'महाबल' की प्रत्येक  
 बात प्रामाणिक और गंभीर रूप से विवेचनीय नहीं है।  
 इसके धर्मिप्रसा के इस नाम में मर्यादा और कनिय-मुद्र का  
 के प्रलय-महर्षि का बलीय दिया है। इतिहास इस संबंध में मौन है।  
 बीड-बंधों, गाथाओं तथा अनुपनिषों में भी इसका उल्लेख मुझे नहीं मिला  
 मिला परन्तु उद्दिष्ट की लेखिका श्रीमती भरतनीदेवी पाणिप्राणी ने  
 अपने नाटक 'कनिय-विजय' में इस प्रलय-नामा का बलन दिया है। धर्मि  
 उद्दिष्टे वहाँ मर्यादा का धारक की पुत्री माना है तथा महाबल की  
 निधियों के अनुसार यह संभव नहीं हो सकता क्योंकि यदि उसकी आयु  
 १ वर्ष की जाती तो प्रलय का प्रलय ही नहीं उज्जा और २ वर्ष

१. इस पुत्र २३४ २१ और २२४ 'धारक'—ने श्री कनिय-मुद्र

की माँबी जाय तो उसका पति धर्मिण्ड्या और पुत्र मुमन उसके साथ रहे होंगे। ऐसी व्यवस्था में भी प्रणय नहीं हो सकता। इसलिए 'महार्घ' की किसी भी बात को न मानकर मैंने संघमित्रा को अशोक की छोटी बहन माना है। निम्नबेहू बहू सीतेजी बहन की क्योंकि महेंद्र अशोक का सीतेजा भाई था। इस वस्तुता का प्रयोग भी मैंने अशोक के हृदय पर प्रथम प्रभाव डिलाने के लिए किया है।

इतिहास में भी और साधारणों में अशोक के कई भाइयों का नाम आता है परंतु बहन का नाम केवल 'महार्घ' में आता है। प्रकरण ४ में लिखा है—

"राज को स्वयं से राजा ने देखा कि उसकी धारणा मोहो बहिन मरक में धर्म की गई है। राजा बड़ व्याकुल हुए। इन संकाय की मित्रा के लिए उसकी छोटी बहन पावनी जिह्वाणी धारणी जो बंधनों में मुक्त हो चुकी थी वायु द्वारा पहुँची और राजा ने बोली—'जो नाम तुमने दिया है वह बड़े धर्म का है धर्म के प्रमुख साधारणों में इनका प्राथमिकता करो उनके साथ लक्ष्योत्तम प्रदान कर लक्ष्य धर्म (बौद्ध धर्म) का पता चला कर। ऐसा करने में तुम्हें धार्मिक मिलेगी। लिखा है अशोक न बहन के उपदेश का अनुसरण करने दिया।

यहाँ तक हो जान ही परंतु हमने इनका स्पष्ट है कि अशोक की बहन थी। मित्रा के भी निम्नलिखित ऊपर का चुरा है इन बात की पुष्टि करते हैं। इन प्रकार के ही वाक्यांशों को वाक्यांश नहीं है। उनकी नींव मुक्त है।

अशोक आठवीं की मूल वक्रावस्था का संबंध है उनके विषय में ही मत नहीं है। बनिष्-मुक्त एक ऐतिहासिक बटना है और उम्मीद यह अशोक का हृदय-परिचय भी। उनकी धर्म निरिपों की आता उनके पञ्चांग की मापी है। वह परचांग विभी नली वापुष्ता का परिचय नहीं देता बनिष् एक महान् राजनीतिज्ञ और एक महान् मानव

के हृदय-मधम की भीषी देना है। कलित-मुक्त से क्या हुआ इमन  
बगुन प्रवाह्य प्रवाल गिलापण से किया गया है—

“देवताया के प्रिय प्रियवर्ती राजा से प्रमिषिक्त हान के घाटन करें  
कर्मिय को विजय किया। यहाँ से हैक सात घादमी बाहर से जाये गए,  
एक नाम घादमी घातन हुए और इमने व<sup>०</sup> गुमा के थ जा गये। उमके  
परचात जब कर्मिय शास्त्राभ्य से मिला दिया गया (अपवा कर्मिय विजय  
हुआ) तबसे देवताओं के प्रिय का पर्यावरण बढ़ा घम के स्नेह की  
हुडि हुई और घम का अत्यधिक विस्तार हुआ।  
हमी गिला-भग से कलित बाढी लका है फिर मिला है—  
“जितने अनुप्य कर्मिय-मुक्त से जायन हुए, मर या बँद किये गए,  
उमने १ बँदा है व शिखे का नाम भी घम महापत्र घनोक के  
मिए बड़ गग का कारण हुआ।”

“जो घम की विजय है उन ही देवताया का प्रिय मुक्त मानना है।  
और वह देवताओं के प्रिय का यहाँ (अपन विजित से) और सभी घनो  
में—मैनाँ मोक्ष पर घनो (परिचमी लमिया) से बहानक प्रमिषिक्त  
नामक मान राजा है और उन प्रमिषिक्त के परे पार राजा है तुमसे  
नामक घनिष्ठ नामक मर नामक और घनिक नंदर नामक (तथा)  
मीने (दरिद्र तरु) जोड़ पाँदय और तापदगीवालों तरु मेरे ही  
द्वार राज दिया में (ए राज रिपवर्तियों में) मान-बोनों में नामक  
में नाम वलियों में भात्र विनिनिवों में अघ-मुनिनों के (मभी जय)  
—ज्ञात हुआ है। मभा जय देवताया के प्रिय पर्याप्तमान का अनुमान  
करन है। जहाँ देवताओं के प्रिय के हून मरी भी जाने के भी देवताओं  
के प्रिय घम गुल का विषम को और पर्याप्तमान को मुनकर घम का  
अनुविधान (साधारण) करन है और बनें। और इस प्रकार सब जग  
को विजय प्राप्त हुई है बड़ प्रीत रगुनी है।”

घनो ५५ जग वंश ५३१ ।

१ भोजनानीन ज्ञान—इमान भू ५५ ८ ५३१ ।

२ भारतीय इतिहास की कथा—म १ निध-वाट, मग ८ ५३४ ५३५  
१९ १३३ ५३१५५

यह परिवर्तन निम्नलिखित अक्षुब्ध और महान् है, क्योंकि एषदम ही नहीं हो गया था। यह कैसे हुआ इनका सुंदर और स्पष्ट वर्णन अशोक के कनिष्क-विजय के बाद नीचे बरत प्रकाशित अपनी पहली धर्म-मिति (अभिप्राय) में इस प्रकार किया है—

“यद्वाही बरतः ॥ अधिकांशे किं मे आशयः (उपासक) हुआ हूँ वह मैंने अश्वत्थ प्रक्रम (उद्यम) नहीं किया बरत से ऊपर हुआ जब मैं मंत्र के पास पहुँचा और मूढ प्रक्रम करने लगा। इस बीच अश्वत्थीय (भारत वर्ष) के मनुष्य की देवताओं से मित्रा किया है। यह प्रक्रम का फल है। बड़े ही लोभ यह फल या सफल हों तो नहीं। छोटा आदमी भी प्रक्रम से विपुल स्वर्ग या सफल है। इसीलिए यह (आदेश) सुनाया गया कि छोटे-बड़े सभी प्रक्रम करें। अंत भी जान आर्य कि (हमारा) यह प्रक्रम है और किरस्पादी हो। यह कार्य बड़े मिराज न बड़े मूढ़ बड़का बिना हुआ रात चौकना बड़ा।

एक और प्रक्रम उठ सकता है कि आगिर अशोक के कनिष्क विजय क्यों किया। यद्यपि इस नाटक की कथावस्तु से समझा कोई प्रमाण संभव नहीं है। ता भी यह प्रमाण संभव नहीं है। इसका उत्तर भी बड़ा मरत है। अशोक बुद्ध रात्रनीति का और आगिर की नीति का अनुसरण करने हुए। वह मनुष्य प्रक्रम की मीर्य-आश्रय के अंतर्गत साम्राज्य का। इतिहास का अंतिम लक्ष्य अश्वत्थ करण का यह स्पष्ट हो जाना है कि कनिष्क मीर्य के मूढ मरण के अर्थान का। अश्वत्थ न वह नहीं के विरुद्ध विरोध किया वह वह स्वर्ग हो गया। आगिर ने अश्वत्थ और फिर विपुल के समय में इस अश्वत्थ की आश्रय में मित्रा की अंतरा बोधित की। निम्न के साथ साम्राज्य के बीच धर्म के इतिहास (पृ १८) में लिखा है—“उद्यम नहीं मरत” रात्र पानियों के साम्राज्य और कनिष्क की उपासक और एक लक्ष पुत्र के बाद पुरानी और पश्चिमी जगहों के बीच मनुष्यी भूमि की रात्र विपुल की अर्थान में ला दिया। अतः वह कनिष्क का न जीत गया। यद्यपि वह तीन और है मीर्य विजय के विरुद्ध था ता भी अंतिम इतिहास इतिहास और अश्वत्थ के आश्रय वह अश्वत्थ-आश्रय

में जोड़ा होता रहा। आगवय की आतुरंत राज्य-नीति को पूर्ण करने के लिए कर्मिय को विजय करना आवश्यक था और वही आगवय ने किया। यदि वह ऐसा न करता तो कर्मिय अपनी समृद्धि और शक्ति के कारण सीर्य-साम्राज्य के लिए घातक बन जाता।

साम्राज्यवाद की यह नीति बुरी चीज या अच्छी यह विचार यहां धर्मनिरपेक्ष है कि भी इसका स्पष्ट है कि कर्मिय-मुद्र की करता और बर्बरता में घण्टों का हृदय जल हो उठा था और उनमें अधिकतर मृत्यु न करने की योजना थी। भेरी-नाद धर्म-योधों में परिवर्तित कर दिया गया। इस प्रकार साम्राज्य बना रहा परंतु उनका आधार हिंसा के स्थान पर उठा गया महिषासुर की मृदना हो गये। आग का पुग भी बहुत-बहुत घण्टों-बाजीरानों के सामने है। साम्राज्य-निष्ठा के संसार को जल कर रहा है। शत्रु-शक्ति का लक्ष्य धर्मनिरपेक्ष है और उनमें मरणा न मानना पाप होकर विभव रही है। धर्मनिरपेक्ष में जो संदेश देने का बतों के लिए आग था वह हमारे लिए विजय उपलब्ध है—

“मेरे पुत्र और परपीत शत्रुओं द्वारा विजय करने का विचार न करो। उन्हें उगारना (शक्ति) और महिषासुर घण्टों दंड नाम (मृदना) में धर्मनिरपेक्ष मानना चाहिए। यदि उन्हें विजय में धर्मनिरपेक्ष माना तो धर्म विजय की ही विजय समझना चाहिए। उगी विजय में धर्मनिरपेक्ष मानना चाहिए।

परंतु इन संस्था का धर्म निरपेक्षता नहीं है जिन्ना है और इन नाटक की निरपेक्षता के कारणों से—“विजय में धर्मनिरपेक्षता है। धर्मनिरपेक्षता की लक्ष्य है। वह प्रभाव भी देनी है और जगती भी है। यह दूसरी बात है कि कुछ लोग धर्मनिरपेक्षता बना लें हैं और कुछ धर्मनिरपेक्षता का।

मोक्ष में हम नाटक की यही जगती है। मेरे न चाहने पर भी यह निगा गया। तीन बार तीन स्वयंसेवकों के रूप में निगा धर्मनिरपेक्षता के कारण धर्म नाटक का नाम ही धर्मों में पूर्ण कर दिया है। इस प्रकार धर्मों का प्रयोग विजय नहीं हुआ है। हां, धर्म धर्मों का लक्ष्यनिरपेक्ष करने के लिए “आत्मनिरपेक्ष” और “धर्मनिरपेक्ष” धर्मनिरपेक्ष है पर उनका विचार



जी नाटक अपने-आपमें पूर्ण है।

अंत में जो इस नाटक के सृजन के कारण हैं हम सबका मैं धाबाटी हूँ विशेषकर छात्राशास्त्री के अधिकारियों का। धाई चिरंजीव ने वृषा पूर्वक जो गीत लिख दिये हैं उनके बिना तो नाटक का रस लक्षित हो जाता। उनका मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ। मैं उन विद्वानों और कलाकारों का भी धाबाटी हूँ जिनके परिष्कृत से संक्षिप्त सामग्री का मैंने लाभ उठाया है।

### दूसरा संस्करण

इस वर्ष १९२६ में बिस्व सभागल मुद्र की २५ वीं जयंती मना रहा है। इस अवसर पर 'नव-प्रभात' का दूसरा संस्करण होना मेरे लिए सीमान्त की बात है। धात से पूरा छाया ही अभी छाँटि की आवश्यकता पर इतना जोर दिया गया है। नवमुख भावी मुद्र की सर्वनामिनी कल्पना में वसित बिस्व सभाग के चरित्र को जितना धात समझ गयता है उतना छाया जोर अभी नहीं।

रगमय की दृष्टि में नाटक में वरु संसाधन दिये गए हैं। धाव स्थानानुसार और भी परिवर्तन विय जा सकत है।

### पाँचवाँ संस्करण

इस संस्करण में भावा की दृष्टि में एक-दो संशोधन किये हैं तथा रमयन की दृष्टि में कुछ नूतना भी दी है।

कुलाई १९२८

—बिस्व प्रभाकर

समय  
कलिंग-युद्ध की अंतिम रात ईसा स २६५ बप पूव का  
भारत ।

स्थान  
कनिग की राजधानी सोसली (वर्तमान घोसी जि०  
पूरी) के पास युद्ध भूमि ।



# नव-प्रभात

## प्रस्ताविक

(रंगमंच पर अस्तगामी सूर्य की सात्त्विकता के कारण प्रकाश मंद पड़ता जा रहा है। आनवासो मृत्यु की तरह अचानक उसे उसे प्रसन्नता आता है। दूर पृष्ठभूमि में सम्य शिबिर से मानो शीतल की आवाज उठकर आकाश में छा गए हैं। कभी अग्नि की लपटें ऐसे धुंधला फेंकती जान पड़ती हैं जैसे महानाराय आकाश को निगल जाना चाहता हो। कभी परत फड़फड़ाते हुए गिद्ध<sup>१</sup> एक भयंकर अपराधज्ञ की तरह निकल आते हैं। गिरोह से प्रसन्न हुआ कोई गीबड़<sup>२</sup> ओर की तरह सुपत्ता हुआ आता है और जाता जाता है। आकाश में न कोसाहस है, न उल्लास, न पराजय भी नहीं है। बेचस भवान् भी है जैसे किसी ने भीतर का गला घोट दिया हो। जैसे महानाराय की सीसा

<sup>१</sup> <sup>२</sup> साधारणतया गिद्ध और गीबड़ का रंग-मंच पर आना संभव नहीं है इसलिए इसे छोड़ा जा सकता है।



माँ आहों से नहीं पिघलता बज्य हृदय हिंसा का  
तेरे हृदय-जल से न बुझेगी यह ज्वाला विकराला !  
राग बिताघों की उड़-उड़कर पूछ रही सुरपुर से  
'कहाँ भगीरथ-सा जन जीवन-गंगा सानेवाला ?'  
माँ तेरे धांगम में जलती महानाग की ज्वाला !

(गाते मात यह इतनी तन्मय इतनी आत्म-विभोर हो उठती है कि मुग्धपुत्र जो आती है । मुननेवालों के हृदय बेहता घोर महानाग के भय से घोर भी धुक धुक करन मगते हैं । इसी समय राग-मध पर एक दूसरी नारी प्रवेश करती है यह सध मित्रा है । सभी युवती है । उसन सनिक का परिधान पहना है । जूड़ा बसकर बांधने से उसका मुग की मुद्रा कसो हुई कमल की तरह हो गई है । कमर में फेंटा बसे वह किसी घोर से कम नहीं बिताई बैती पर इस समय वह उद्दिग्न है । आते हो वह कदल स्वर में पुकारती है ।)

सधमित्रा रेवा ! रेवा !!

(गायिका सहसा काँप उठती है)

रेवा बीन ! (बेगनर) देवी ! (भुङकर) मैं दबी को प्रणाम करती हूँ ।

सधमित्रा हुपा रेवा ! पर तुम यह क्या कह रही हो ? अपनी प्रचुस्ति कागो का यन्त्रा की टीनों से क्यों भरे द रही हो । महानाग करने का लिए दास्य ही क्या कम हैं जो तुम संगीत की चतना को भी उसकी दासी बनाये दे रही हो ।  
रेवा दबी ! महानाग की इन बसा में बसत दाताम ही प्रममता

से नाच रहा है केवल गिट्टी और गीदड़ ही आनंद का संगीत बजाप रहे हैं। खेप सब मरण की दानवी सीमा है। नीचे धरती पर लक्ष-लक्ष आम्पहीन नारियों के नेत्रों से बहनेवाली वेदना में असंख्य मानवों के लल-विह्वल सब तरते हैं। ऊपर आकाश में उनकी प्रेतात्माएं, स्वर्ग में स्थान कम पड़ जाने के कारण सूर्य का प्रकाश ही नहीं रोकती बल्कि फिर से अपन शर्बों पर आक्रमण कर रही हैं और इस बीजत्स सीमा को मनुष्य कहता है विजय ! सम्यता और संस्कृति की विजय ! (मुड़कर) देवी ! क्या आप ऐसी परिस्थिति में संगीत से आहों को अग्नि के प्रतिरिक्त प्रेम की छीतसता की आशा करती हैं ? मृत्यु के प्रतिरिक्त जीवन का संदेश सुनना चाहती हैं ?

मित्रा ( पास जाकर उसके कंधे को थपथपाती है ) छांत रेबा छांत ! जो कुछ है वह मैं भी देख रही हूँ। मनुष्य आज पागल हो गया है लेकिन वह इतना अधिक पागल हो गया है कि इस महानाथ के सूत्रधार स्वयं सम्राट उद्विग्न हो उठे हैं। उन्हें शका होने लगी है कि यह कलिंग की पराजय है या उनकी हार। यह क्रांति का रक्त है अथवा महानाथ का शोणित।

रेबा (बद्धित-सी) देवी !

सचमित्रा मैं ठीक कह रही हूँ रेबा ! सम्राट को शका होने लगी है।

रेबा (बद्धित-सी) सम्राट को शका होने लगी है ?

संध्यामित्रा ऐसा ही जान पड़ता है रेवा ! पिछले चार-पाँच दिनों से उनके स्वभाव में मैं एक अद्भुत परिवर्तन देख रही हूँ । जब-जब वह रणभूमि या बंदीगृह से सौटते हैं तब-तब ऐसा लगता है कि जैसे उनके प्राण भुगस रहे हैं ।

रेवा देवी ! यह तो मैंने भी अनुभव किया है (गंभीर स्वर) इधर मधुर भावक संगीत सुनते-सुनते वह झोंक पड़ते हैं । अपने हाथों को उलट-पलटकर देखने लगते हैं ।

संध्यामित्रा यही रेवा यही टांका का जन्म है । रक्त-स्नावित पुटभूमि और जीवित मानवों की बराहों से गुजरते हुए बंदीगृह से झूटकर जब वह तुम्हारी तापहारी मधुर बाणी सुनते हैं ।।। उन्हें विश्वास नहीं आता कि हम नरक में यह मुग्न वहाँ से आ गया ।

रेवा (सोचती हुई) देवी की भाँसे बहुत दूर तक देख लेती हैं । संध्यामित्रा (मुतक़राती) : ई) अच्छा रेवा ! आज क्या तुम रात्राद् के पास नहीं गई ?

रेवा मही देवी ! मुना है कि वह आज किसी गंभीर मंत्रणा में लगे हुए हैं ।

संध्यामित्रा गमभी ! कलिंग व राजकुमार अभी नहीं परते गये हैं ; उमरी बिठा है ।

रेवा देवी ! जब तो मोरानी में आन्नी गिगार् ही नहीं देते । कुमार व जामे वहाँ जा छिपे हैं ? मुना है कि कम जंगेने अद्भुत पराक्रम दिखाया था । उनकी हाथी-सेना की मार से मगध सेना भाँति बहक उठी थी ।



संघमित्रा (कोई-कोई) हाँ रेवा ! देखा तो मैंने भी था पर सबसे क्या ! युद्ध अब भी हो रहा है । वह देखो आकाश में गिड़ कैसे मंढरा रहे हैं ? दूर वह प्रकाश भी तेज हो चला है । धीरे-धीरे दूर करने के लिए किसीने फिर धाग जलाई है । (निश्वास) ससार समाप्त हो जाएगा पर वह युद्ध समाप्त नहीं होगा ।

रेवा सब देखी ! यह युद्ध समाप्त नहीं होगा । मनुष्य की दानवी सिप्ता उसे समाप्त नहीं होने देगी । परन्तु देवी ! मरने के लिए मनुष्य इतने प्रयत्न करता है, जीने के लिए भी कुछ करे, तो क्या संसार का कुछ अहित होगा ?

संघमित्रा (मुस्कराती है) रेवा तुम गायी ही नहीं सोचती भी हो । पर कुछ गलत सोचती हो । वे सारे प्रयत्न मनुष्य जीने के लिए ही तो करता है । हाँ यह दूसरी बात है कि वह यह सब अपने जीने के लिए करता है । तुम जिस कस्यारा की बात कहती हो वह तभी होना जब मनुष्य दूसरों के लिए जियेगा (एकजम) पर पर— वह कौन है ?

(संघमित्रा एक ओर संकेत करती है रेवा भी ज़रूर ही देखती है ।)

रेवा कौन ! ओह वह तो महामात्य है ।

संघमित्रा : महामात्य राधागुप्त ! वे किसनी शीघ्रता से सम्राट के शिविर की ओर जा रहे हैं अवश्य कोई बात है । वह सुनो ! वह जय-धोप भी उठ रहा है ।

(दूर जय-घोष उठता है। उठना रहता है।)

स्वरघोष मगध-सम्राट् की जय। सम्राट् अशोक की जय।

रेवा घायल कुमार पकड़ लिये गए हैं।

सधमित्रा (सहसा कांपकर) कुमार पकड़ लिये गए हैं? क्या

सब कुमार पकड़ लिये गये? चलो रेवा। चलो। महा

भार्य स पूछें कि क्या सब कुमार पकड़ लिये गए हैं?

(बोसती-बोसती इतनी क्षीप्रता से रगमच से बाहर जाती है कि रेवा चरित रह जाती है और उसे पुरारती हुई पीछ-पीछ बोड़ती है।)

रेवा देवि देवि (सहसा एक जाती है) कुमार के पकड़े जाने

की बात सुनकर देवी सधमित्रा चित्तनी चञ्चल हो उठी

है। मनु हा जाने पर भी कुमार के प्रति बनबा प्रेम कम

नहीं हुआ है। (निश्वास) प्रेम भी कितना प्रबल कितनी

परिग्रह भावना है। सब साथ प्रेम ही क्यों नहीं करने लगते

(एकदम बेतकर) ओह! कुमांगी कस भागी जा रही हैं?

कसुं मैं भी देगू

(वह भी जाती है और क्षणिक सम्राट् के बाद लघुपवनिका

गिर जाती है)

---

रंगमंच पर प्रबल बनबा प्रेम की वमी हा तो 'आत्मनिर्भर' की लोहा या सजना है।

## पहला अंक

(सम्राट् अशोक अपने शिविर में इधर-उधर घूम रहे हैं। वहाँ की सजावट में राजसी वैभव की पूरी छाप है। मृमि पर बहुमूल्य कासीन और पसीप बिछे हैं। यथास्थान मङ्गमसी आचरण से बेधित तोपक भी रखे हैं। एक ओर सम्राट् के बैठने का ऊँचा आसन है। इधर-उधर घुपवान रखे हैं, जिनसे उठकर सुगन्धित गुप्ता वातावरण को किञ्चित् धूमिल बना रहा है। द्वार के पास भीर पीछे की ओर अनेक मुक्तबासे पत्तीस स्रोत रखे हैं जिनमें बोपक बल रहे हैं। पृष्ठभूमि में साँध्यगीत की ध्वनि उठती है। वहाँ कोई नहीं है। परवा उठने पर सम्राट् धूमते बिकाई बैठे हैं। वह कुछ उद्विग्न हैं। वह सुम्बर नहीं हैं, परंतु उनका व्यक्तिस्व प्रभावशाली है, बिनास वसत्यस आबानुबाहु, प्रशस्त लसाट और बड़े-बड़े मंत्र, सब बिम्बास से भरनवासे हैं परंतु इस समय वह बहुत उद्विग्न हैं। उनके रत्नबद्धिष्ठ धामुपण, उनके रेशमी उत्तरीय सब इनकी बीनता को पहरा करते हैं। यह कुछ बोल रहे हैं। सहसा कहीं आगुट होती है वह चौंक पड़ते हैं।)

अशोक (चौंककर) कौन ? (कोई उत्तर नहीं) कोई नहीं,

कोई तो था । (बैठकर) ओह छाया की मेरी छाया में  
समझ कोई सनिक है

(स्वर घस्फुट होते हैं । एक दीप निश्वास लेकर वह फिर  
बोलते हैं ।)

सब समाप्त हो गया । सब कसिंग का रूप खूब हो गया  
एक सागर घाँसी भर गये 'ठोक हुआ' 'ठीक हुआ' न मुँह  
में घाँसी भरते ही हैं

(उसी समय राधागुप्त शीघ्रता से प्रवेश करते हैं और  
झकझक अभिवादन करते हैं ।)

राधागुप्त सत्ताद की जय हो ! बसिग क राजकुमार बसी हो  
गुंके हैं ।

अशोक (छोड़कर) बसिग क राजकुमार बसी हो गुंके हैं ?

राधागुप्त हाँ सत्ताद !

अशोक सप कहते हो महामात्य ?

राधागुप्त प्राप्ता हो तो राजकुमार की सत्ताद के चरणों में  
उपस्थित किया जाय ।

अशोक (अनमना-सा) अभी ठहरो । पहले मुझे यह बताओ  
कि क्या अब मुँह की भाव-परकता नहीं रही ?

राधागुप्त हाँ देव बसिग विजय पूरा हुई ।

अशोक (उसी तरह) हाँ देव बसिग-विजय पूरा हुई । मुँह  
समाप्त हो गया । अब दाँतों की झरार मुँह के नहीं  
मिलेगी । अब चाहतों की भीतरार बँ हो जायगी ।

राधागुप्त देव ! अब बसिग में वीर गया है जो दाँतों की

भ्रकार सुमेगा ! जो कुछ अनिताएँ या भासक वहाँ सेप हैं वे न सुन सकते हैं और न बोल सकते हैं । वे केवल अपसक दृष्टि से धून्य में ठाकते रहते हैं । उनसे बातें करने पर वे कुछ इस प्रकार देखते हैं कि बोलनेवाला स्वयं पामी-पानी हो जाता है । हाँ वहाँ केवल एक व्यक्ति है जो देखता भी है और बोलता भी है ।

अशोक वह क्या बोलता है ?

राधागुप्त यह तो मैं नहीं बता सकूँगा देव ।

अशोक (सहसा तेज होकर) महामात्य ! जानत हो तुम किस से बात कर रहे हो ?

राधागुप्त जानता हूँ भारत सम्राट् ।

अशोक तब !

राधागुप्त सम्राट् चाहें तो वह बात स्वयं उसीके मुँह से सुन सकते हैं ।

अशोक तो तुम उस वाचास को पकड़ साये हो ?

राधागुप्त मैंने अभी निवेदन किया था देव ! कसिंग के राज कुमार बंदी हो चुके हैं ।

अशोक कसिंग का राजकुमार ! कुमार बंदी होकर भी बोलता जानते हैं ?

राधागुप्त सबसे वह कुछ अधिक बोलने लगे हैं सम्राट् ।

अशोक (होंठ बजाकर) वह शायद भारत-सम्राट् बड़ाशोक के स्वभाव को नहीं जानते ।

राधागुप्त देव ! कुमार मगध में हमारे अतिथि रहे हैं । सम्राट्

उनकी धीरता से परिचित हैं। घानैट के समय उनके हस्त सायब की सन्नाद ने भूरि भूरि प्रशंसा की थी और देवी संधमित्रा

अशोक (जोर-से) महामात्य !

राधागुप्त अपराध क्षमा हो देव। देवी संधमित्रा आज भी कुमार की प्रशंसक हैं। अभी-अभी उनके धनी हो जाने का समाचार सुनकर उन्होंने कहा था

अशोक (झोपा-सा) क्या कहा था ?

राधागुप्त उन्होंने कहा था कि कुमार के साथ वही व्यवहार होना चाहिए जो एक मीर पुण्य के साथ होता है।

अशोक (समझकर) महामात्य ! हमें देवी संधमित्रा के परामर्श की आवश्यकता नहीं है। हम जानते हैं कि हमें क्या क्या करना होगा। कुमार हमारा राजा है और संधमित्रा आगती है कि राजा के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। तुम अभी को उपस्थित करो हम उसकी बातें सुनेंगे।

राधागुप्त जो आज्ञा देव।

(राधागुप्त का गमन और रणवेग में संधमित्रा का प्रवेश)

संधमित्रा भैया !

अशोक कौन संधमित्रा ! तुम इस समय यहाँ क्या पाई ?

संधमित्रा मन्नाद से नियन्त्रण करने कि गायिका आ गई है।

आज्ञा हो तो उपस्थित करूँ।

अशोक इस समय नहीं संधमित्रा ! मुझे कुछ आवश्यक काम है।

संधमित्रा क्या मैं जान सकती हूँ कि सम्राट को इस संभ्याकाम में क्या काम है ?

अशोक तुम काम जानना चाहती हो । (एकदम) — नहीं संधमित्रा मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकूंगा ।

संधमित्रा (हँसकर) बताने की कोई आवश्यकता नहीं सम्राट् । मैं जानती हूँ

अशोक तुम क्या जानती हो ?

संधमित्रा यही कि आप कलिय-कुमार के भाव्य का निर्णय करने जा रहे हैं । मैं आपसे केवल इतना निवेदन करूंगी कि आप आपके सौर्य की परीक्षा है ।

अशोक भारत-सम्राट् का सौर्य बिद्व विदित है । कुमार को मेरे चरणों में सिर झुकाना ही होगा ।

संधमित्रा और न झुकाया तो ?

अशोक तो यह तमबार उस झुका लेगी ।

(तमबार को म्यान में बसाता है ।)

संधमित्रा (कांपकर) वैया !

अशोक (हँसकर) कांप गईं ! क्या तुम्हें धस्त्रों से डर लगने लगा है ?

संधमित्रा नहीं मैं धस्त्रों से नहीं डरती सम्राट् ।

अशोक तो कुमार की मृत्यु से डरती हो ?

संधमित्रा नहीं सम्राट् मुझे उसकी चिंता नहीं है ?

अशोक तो फिर किस बात की चिंता है ?

संधमित्रा मुझे सम्राट् की चिंता है । गसती से वह तमबार को

दीये का प्रतीक समझ बैठे हैं ।

अशोक उसबार नहीं तो दीय का प्रतीक और क्या है ?

संघमित्रा हृदय ! हृदय की विश्वासता और उदारता का नाम दीय है सम्राट् ।

अशोक हृदय की विश्वासता और उदारता (सहसा घट्ट हास) हृदय की विश्वासता और उदारता ! आन पड़ता है कि कसिंग व उस मिथु का प्रभाव तुमपर भी पड़ा है संघमित्रा ! आसिर तुम नारी हो और नारी की अवरोध नहीं बढ़ी दुबल होती है । लेकिन पाद रखा अशोक मोड़ों की इस दुर्बल नीति के बल पर भारत का सम्राट् नहीं बना है ।

संघमित्रा लेकिन सम्राट्

(जिसके आगे का स्वर)

अशोक (शीघ्रता से) तुम सब आ सबती हो संघमित्रा ।

संघमित्रा भया !

अशोक जाओ संघमित्रा ! भारत-सम्राट् अशोक तुम्हें जाने की आज्ञा देता है ।

संघमित्रा (जाती हुई) आ रही है सम्राट् । पर भूलिये नहीं कि हृदय की विश्वासता का नाम ही दीय है ।

(जाती है)

अशोक (स्वगत) हृदय की विश्वासता का नाम दीय है ।

संघमित्रा ! मैं जानती हूँ कि तुम क्या कहना चाहती हो ? तुम कसिंग व मुद्राज से प्रेम करती हो । तुम मुझे भोला



महीं दे सकती पर युवराज मेरा शत्रु है और तुम मेरी बहन !

(राधागुप्त का कलिंग-कुमार के साथ प्रवेश । कुमार बानों समिकों के बीच में हैं । अवर आते ही वह कुछ हटकर खड़ा हो आते हैं । कुमार रणवेष्ट में हैं । प्रसन्न लभाट, उन्नत वस्त्रस्थान, किंचित् क्षामस जल उदम्य विज्वात से पूरण भयम और प्राजानुदाह, एक साथ रत्ना और बंड के प्रतीक । उन्हें बलकर आगे पसर भारमा मूल जाती हैं ।)

राधागुप्त सन्नाह की जय हो । कलिंग के राजकुमार उपस्थित हैं ।

अशोक (कठोर स्वर में) महामात्य कलिंग का भव कोई राजकुमार नहीं है । यह एक साधारण बंदी है ।

कुमार अशोक ! अपनी वास्तविक अवस्था में सभी साधारण होते हैं । तुम भी अशोक पहने हो सन्नाह पीछे ।

अशोक (कड़ककर) बंदी तुम जानते हो तुम किसीसे बातें कर रहे हो ?

कुमार जानता क्यों नहीं । मैं ममय के हत्यारे सन्नाह बंडा शोक से बर्तों कर रहा हूँ उस बंडाशोक से जितने मां वसुधरा को अपने साक्षों पुत्रों का रक्त पीने के लिए विवश किया है ।

अशोक (क्रुद्ध) बंदी कलिंग के लोगों की तरह तुम बाधात ही नहीं घुट भी हो । इस असम्यता का एक ही प्रतिकार

मेरे पाग है धीर वह है बटार ।

(बटार बिलाता है)

कुमार हत्यारे के पास बटार के प्रतिरिक्त धीर भी कुछ होता है क्या ?

अशोक बही ! ये धमी तुम्हारा सिर काट सकता है ।

कुमार जो धरती माता अपने साजों पुत्रों का रक्त पी चुकी है, वह अपने एक धीर पुत्र का रक्त पीयेगी तो कोई संतर नहीं पड़ेगा ।

रामानुज भूटता की भी एक भीमा होती है कुमार ! होश में आकर बातें करो ।

कुमार तुम्हें भी क्रोध आ गया महाभाग्य ! आसिर हो तो विष्णुगुप्त आराधन के सिद्ध । मेरे मित्र मुमता रामानुज तुम्हारे इस हत्यारे सम्राट् को एक दिन इस रक्त-प्लावन का बदला चुकाना होगा । उसका अपना हृत्प उसकी भस्मना करेगा ।

अशोक (महद्दास) बही उपगुप्त का स्वर यही बौद्ध-भिक्षु की बाणी । बौद्धों की बुद्ध नीति के कारण ही तुम्हारा पतन हुआ है यही ।

कुमार मेरा पतन नहीं हुआ अशोक ! पतन तुम्हारा हुआ है । अशोक मेरा पतन ! भारत सम्राट् का पतन ! अशोक ! बने अशोक !

कुमार अशोक नहीं अशोक ! वह पूरी तरह समय हो चुका है । भारत माता का रक्त तुम्हारे पतन की ओर

कर रहा है। लाखों घायलों की कराह में तुम्हारे पतन का स्वर गूँज रहा है। ससमाधों की सुनी मांगों में माताओं की आसी गोदियों में शिशुओं की निरीह दृष्टि में सब वहीं तुम्हारे पतन की कहानी प्रकट है। कसिंग के उजड़े हुए ग्राम वीरान प्रदेश में सब तुम्हारे पतन के साक्षी हैं। अशोक तुम जीतकर हार गये हो कसिंग मिटकर धमर हो गया।

अशोक अशोक हार गया है कसिंग धमर हो गया है।  
(अट्टहास)

कुमार हँस लो जितना हँस सको हँस लो। मगर कसिंग में तुम्हें यह हँसी नहीं मिलेगी। वहाँ के मार्ग रक्त से रंगे पड़े हैं। वहाँ सिंहासन के चारों ओर लाखों के ढेर लगे हुए हैं। वहाँ बंदीघरों से उठती हुई बंदियों की कराह ने सारे बातावरण को बिपाक बना दिया है। अशोक तुमने कसिंग की धरती को जीता है आत्मा को नहीं। धरत, की धीत को तुम जीत कहते हो?

राषागुप्त जीत नहीं तो धीर क्या है। आत्मा को किसने देखा है। शरीर सत्य है उसीकी जय सच्ची जय है। कुमार तुम्हारे इस सन्द-आस से तुम्हारी पराजय जय में नहीं पसट सकती।

कुमार मेरी पराजय। मुझे किसने पराजित किया है?

राषागुप्त भारत-सम्राट महाराज अशोक ने।

कुमार राषागुप्त। जिस कसिंग को सोसह राज्यों को उखाड़

कैकनेबासा तुम्हारा गुरु भाण्डव पराजित नहीं कर सका  
जिसने सदा तुम्हारी सत्ता को चुनौती दी है उसे कोई  
भी कभी भी पराजित नहीं कर सकता। राधागुप्त !  
कसिंग क राजकुमार के घरीर में जब तक प्राण हैं तब तक  
उसे कोई पराजित नहीं कर सकता।

घरोक (तेजो से) बंदी ! तुम मुझे प्रणाम नहीं करोगे ?  
कुमार कसिंग का राजकुमार कसिंग के प्रतिरिक्त घोर किसी  
सिंहासन के सामने मुकना नहीं जानता।  
घरोक लेकिन कसिंग का सिंहासन धूल में मिल चुका है।  
कसिंग का स्वामी मैं हूँ।

(राधागुप्त भी घाबरा में आता है।)  
कुमार कसिंग के पुत्रराज के रहते कसिंग का स्वामी कोई  
नहीं हो सकता घरोक।

घरोक होने का प्रश्न नहीं है। कसिंग का राजमुकुट मेरी  
ठोकरों में मोटा रहा है।

कुमार ठोकर समाना तो दूर की बात है उसकी घोर दृष्टि  
उठानेवाले की आँखें निजाल भी जाती हैं घरोक।  
राधागुप्त बस करो बंदी नहीं तो

कुमार नहीं तो तुम्हारा सिर काट लिया जाएगा। (घट्टहास)  
तुम लोगों में फिर काट लेने से घपिष कुद करने की  
प्रति है हो वहाँ ? तुम बायर हो। घोर बायर कभी

निमीची पराजित नहीं कर सकते।

घरोक महामात्य ! बंदी से कहो कि वह प्य का बित्तहास

(संधमित्रा का प्रवेश)

संधमित्रा सभाद का जय हो !

अशोक (चौककर) कौन ?

संधमित्रा मैं ।

अशोक संधमित्रा ।

संधमित्रा हा सभाद ! कुमार के भाग्य का निर्णय कर चुके ?

अशोक (संभलकर) तुम उस बंदी की बात कर रही हो ?

अच्छा हुआ संधमित्रा जो तुम्हारा विवाह उसके साथ नहीं हुआ । कलिंग के लोग बड़े घुट्ट होते हैं । मैं उसे क्षमा करने को तैयार था परन्तु वह किसी भी प्रकार मेरी अधीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ ।

संधमित्रा अधीनता स्वीकार करने को उसके पास रखा ही क्या है ? सारा देश हमेशा न बन चुका है । वह उर्बर भूमि अपने हर्षोत्पन्न निवासियों के शर्बों से भरी पड़ी है । उसके मार्गों पर घुट्ट-घुट्ट और बहुसूत्र्य हाथियों के अंग-अंग बिखरे पड़े हैं । कलिंग के वे सुंदर वस्त्र जिनको आप और हम सब आज से मंगाकर पहना करते थे नीर नीर होकर हवा में उड़ रहे हैं । ऊफं कितने लोग थे कलिंग में ! मार्ग नहीं मिलता था पर अब

अशोक : (एकदम चौककर) तुम उसका देश देखने गई थीं संधमित्रा !

संधमित्रा जाना ही पड़ता है । जिस समय आपके मूरखीर सैनिक धरों से निकाल-निकालकर उन भोख सरस और

निरपराध कर्मिण-निवासियों का बच करते हैं तो सम्राट  
महानारा का भाया भी धर्म से मुक्त जाता है !  
असोक यह युद्ध है संघमित्रा । घोर युद्ध में बिरोधी का नाश  
ही किया जाता है ।

संघमित्रा जानती हूँ सम्राट् । मैं बिरोध नहीं करती । केवल  
सम्राट् के सैनिकों के कर्म का बखान करती हूँ ।

असोक वे ठीक करते हैं । उन्हें यही पता है ।

संघमित्रा सम्राट् के सैनिक आज्ञाकारी हैं, वहाँ तक कि छोटे  
छोटे बच्चों और घोरतों को भी वे घर में नहीं छोड़ते ।  
उन्हें बाहर निकालकर घरों में भाव समा देते हैं ।  
इसलिए कुमार ने यज्ञती की जो दमघाम क लिए सिर  
दिया ।

असोक तो तुम जानती हो कि देने बंदी का सिर काट सेन  
की आज्ञा दी है ?

संघमित्रा जानती तो नहीं पर वरुणा कर सकती है । बच  
पन से आपको पहचानती है । राजगद्दी भी तो आपने बड़े  
भया मुसाम से सिर का सीदा करक जोड़ी है । घोरों की  
भाति बिरासत में नहीं पाई । बिरासत एक प्रकार का  
दान है घोर दाम सना भीरता का अपमान है ।

असोक (छटछटाकर) गद्दी की तो यहां कोई चर्चा ही नहीं  
या संघमित्रा !

संघमित्रा गद्दी तो गौण है भैया । चर्चा आपको  
है । कुमार को प्राणदंड दकर आपने राज-

अपने स्वभाव की मर्यादा की भी रक्षा की है ।

अशोक (तेज स्वर) स्वभाव की मर्यादा ! संघमित्रा, अशोक शक्ति में विश्वास रखता है । क्या और करुणा को वह साम्राज्य का दाबू मानता है । सुसीम पिता के राज्यकाल में भी तक्षशिला का विद्रोह नहीं खात कर सका था । वह बौद्धों की दुर्बल नीति का पक्षपाती था । वह मानवता की पुकार-जैसी कात्पनिक भावनाओं में विश्वास करता था ।

संघमित्रा निःसंदिग्ध बड़े भैया सम्राट् होने के लिए नहीं थे । वह वही पर बैठते तो मीनों की राज्य-पताका कैसे चारों दिशाओं में फड़गाती ? कैसे कैसे विजित होते ? भरती माता कैसे अपनी संतान का रक्त पीती ? अशोक कैसे मानव-जीत्कार का समीत सुनता ?

अशोक तुम जानती हो कि जीत्कार में भी संयोज होता है ।

संघमित्रा होता है, सम्राट् ! उसको सुनकर तो मनुष्य जीवन से डरना सीखता है ।

अशोक (हँसकर) खम्बों का मायाजाल ! वही खम्बों का मायाजाल । संघमित्रा जो जीवन से डरेगा वह जियेगा कैसे ?

संघमित्रा उसे सम्राट् जीते हैं, जैसे सम्राट् के सैनिक जीते हैं ।

अशोक जैसे सम्राट् जीते हैं ? यानी जैसे मैं जीता हूँ ?

संघमित्रा हाँ सम्राट् ।

अशोक संप्रमित्रा ! तुम भी उन बौद्धों से हेस-मेस बढ़ाने लगी हो । तभी यह रहस्यमयी भाषा बोमती हा । बंदी भी कुछ इसी प्रकार कहता था ।

संप्रमित्रा बंदी क्या कहता था सम्राट् ?

अशोक वह कहता था कि तुम जैसे बोर हो वो एक बंदी का सिर भी नहीं मुरा सके । गोपद्वियां ठुकराने के लिए तो अनेक मोल्द सम्राज में पूमा करते हैं (लोससी हसी) यह सब बाग्बास है । मुजबस हो सबसे बड़ा शौर्य है । हुन्य और धारमा की बातें मारी और मिशुधों के लिए हैं ।

संप्रमित्रा (हसकर) धम्मवाद भैया ! मारी को आपने मिशुधों के समबरा माना लेकिन एक बात पूछू सम्राट् !

अशोक पूछो संप्रमित्रा ! (निश्वास) बात पूछने को तो धाज मेरा भी मन करता है ।

संप्रमित्रा धाजका मन बात पूछने को करता है ?

अशोक करता तो है --

संप्रमित्रा तो फिर पूछिये न । मैं तो सत्ता आपकी संग करती रहती हूँ । आप क्या पूछना चाहते हैं सम्राट् ?

अशोक कुछ नहीं संप्रमित्रा । कुछ नहीं तुम पूछो ।

संप्रमित्रा (बोर बेकर) आप ही पूछिये सम्राट् !

अशोक संप्रमित्रा !

संप्रमित्रा आप कुछ पूछना चाहते हैं सम्राट् । पूछिये—

अशोक पूछू ?



संधमित्रा अगर मुझे किसी योग्य समझते हो तो पूछो ।

अशोक नहीं यह बात नहीं है संधमित्रा । मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ । मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या किसीका बंध करने की कोई और रीति भी होती है ?

संधमित्रा समझी नहीं सम्राट् । और रीति से आपका क्या भास्य है ?

अशोक जिसका बंध करना हो उसके प्राण न निकलें पर वह मर जाए ।

संधमित्रा : ऐसी रीति ! नहीं भैया मैं तो ऐसी रीति नहीं जानती । अस्त्र बांधनेवाला कोई जानता भी न होगा ।

अशोक अच्छा तो जाने दो लेकिन हाँ संधमित्रा ! अस्त्र बांधनेवाला कामर होता है क्या ?

संधमित्रा नहीं तो आपको अचानक यह क्या होन लगा ? आप ऐसे प्रश्न क्यों पूछते हैं ?

अशोक (कांपकर) न जाने न जाने (बुढ़ होकर) नहीं, नहीं मुझे कुछ नहीं हुआ । ऐसे ही कुछ बाद का मया था । कोई बात नहीं है । बात यह है कि अब हम सीधे सिंहासन-विजय के लिए चलेंगे ।

संधमित्रा सच ?

अशोक हाँ ।

संधमित्रा मैं भी चलूंगी ।

अशोक अबदय बसना । वह बहुत सुंदर बेश है ।

संधमित्रा और हम सौंदर्य के अपासक हैं, उसे भाट जाने-

बासे (हँसकर) धम्मसा में रेवा को बुसा साळं। आप  
यक गये होंगे ?

धम्मोक नहीं नहीं संपमित्रा ! मैं गाना सुनना नहीं चाहता।  
मैं अब कभी गाना नहीं सुनूँगा।

संपमित्रा (सहसा रुककर) आप अब गाना नहीं सुनेंगे ?  
क्यों ? क्या हुआ ?

धम्मोक कुछ नहीं संपमित्रा ! हुआ तो कुछ नहीं लेकिन...  
लेकिन ।

संपमित्रा लेकिन क्या

धम्मोक संपमित्रा ! जब रेवा गाती है तो न जाने क्यों मुझे  
युद्ध-भूमि का दृश्य दिखाई देने लगता है। मैं तब उसके  
मादक संगीत में पायलों का भीत्कार सुनने लगता हूँ। मेरे  
कानों में उस समय बंदियों की वरुण पुकार गूँज उठती है।  
(उत्तेजित हो जाता है) संपमित्रा संपमित्रा ! युद्ध में  
इतने धादमी मरते क्यों हैं ? युद्ध होते क्यों हैं ?

संपमित्रा भैया ! भैया ! यह आपको क्या हो गया है ? आप  
प्रसन्न हैं। आपका मन पुराना है। आपको संगीत की  
आवश्यकता है। मैं अभी रेवा को भेजती हूँ।  
(संपमित्रा का शोचता से गमन।)

धम्मोक (उसी तरह धममना-सा) क्यों इतने धादमी मरते  
हैं ? क्यों इतना रक्त बहता है संपमित्रा ! बंजी कहता था  
कि मैंने परछी माता को उसके अपने बेटों का रक्त पीने  
का विषय किया है। अपने बेटों का रक्त ! कोई अपने बेटे

बंदियों की कसण पुकार से उठता है। लेकिन महामात्य में तुमसे पूछ रहा था कि क्या मैं बंदी का सिर नहीं मुका सकता ? क्या उसका सिर काटमा ही होगा ?

राधागुप्त जो भारत-सम्राट् की आज्ञा नहीं मानता उसका सिर काटा ही जाता है।

अशोक लेकिन महामात्य ! आज्ञा तो वह फिर भी नहीं मानेगा।

राधागुप्त सम्राट् ! यदि वह आज्ञा मान लेता तो उसे दंड दिया ही क्यों जाता ?

अशोक दंड 'बंद' 'यही तो उपनिष्ठा कहती थी कि तलवार में धौंस नहीं होता वह हृदय में होता है। क्यों महामात्य ! तुम हृदय की शक्ति को जानते हो ?

राधागुप्त हृदय की शक्ति को नहीं जानता देख ! मैं शासन की शक्ति को जानता हूँ धीर जानता हूँ संगीत की शक्ति को। मैं सभी उसका प्रबंध करता हूँ। (जाता है फिर दौड़ता है) ओह, मैं भूल गया सम्राट् द्वार पर एक मिश्र पड़ है।

अशोक मिश्र, मुझसे मिलने पाये है इस समय ?

राधागुप्त सम्राट् वह किर्तिमय-कुमार से भेंट करना चाहते हैं।

अशोक किर्तिमय ?

राधागुप्त शायद वह कुमार को

अशोक (एकदम) शायद वह कुमार को मेरी धनीनता स्वीकार करने के लिए राजी करना चाहते हैं। (हँसकर) महामात्य जो काम मैं नहीं कर सकता उसे धन्य कर

सकते हैं मिटु कर सकते हैं। यह कसी बिड़बना है? यह कसी शक्ति है? मैं इतना दुबस हूँ फिर भी सम्राट हूँ। -- नहीं नहीं महामात्य! मैं यह शक्ति चाहता हूँ जिसके द्वारा बंसी का सिर मुका सबूँ। क्या वह शक्ति मुझे मिल सकती है?

(महेंद्र का प्रवेग)

महेंद्र अवश्य मिल सकती है सम्राट! घत केवल हथ्था की है।

अशोक कीन? महेंद्र!

महेंद्र आमा सम्राट!

अशोक सम्राट सम्राट! महेंद्र तुम भी मुझे सम्राट कहोगे?

महेंद्र जो आज तक कहता आया है उसको प्रचानक बदल देने का कोई कारण दिखाई नहीं देता सम्राट।

अशोक ठीक है महेंद्र। तुम ठीक कहते हो परन्तु तुम नहीं जानते उग बंसी कुमार ने मुझसे कहा था कि सबसे पहले हम सब सामारण पुरुष हैं। मैं अशोक पहले हूँ सम्राट पीछे।

महेंद्र (हसकर) घोर सम्राट ने उसकी बात मान ली?

अशोक सब तो मही मानी थी पर अब मुझे ऐसा लगता है कि अब मुझे कोई अशोक कहकर पुकारे।

महेंद्र (राधागता की घोर मुड़कर) सम्राट आज कुछ दीन दिखाई दे रहे हैं महामात्य! ऐसा क्यों?

अशोक महामात्य को कुछ पता नहीं। महेंद्र वह मेरी बाणी

है। सब पूछो तो मुझे भी कुछ पता नहीं। मुझे उ बंदी ने दया का पात्र बना दिया है। मेरा हृदय जल रहा है। मुझे समझता है कि जैसे मैं बनेसा हूँ, जैसे मैं एक दुर्बल प्राणी हूँ।

महेंद्र मैया यह तुम क्या कह रहे हो ?

अशोक (भावावेश) मैया ! महेंद्र एक बार फिर कहो तो 'मैया' !

महेंद्र मैया !

(सन्नाह अशोक धाँस मुँहसे हैं।)

राधागुप्त सम्राट् ! मिश्र के लिए क्या धाँसा है ?

अशोक (सहसा संमत्तकर) ओह मिश्र ! उन्हें घाने दो लेकिन महामात्य उनके घाने से पहले मुझे यह बताओ कि क्या मैं कुमार के दब पर फिर से विचार कर सकता हूँ ?

राधागुप्त सम्राट् सब कुछ कर सकते हैं। परंतु उन्हें अपने पद की मर्यादा को समझ सेना चाहिए।

अशोक क्या कहा मुझे अपने पद की मर्यादा को समझ सेना चाहिए, महामात्य ! मैं सम्राट् हूँ किसीका बंदी नहीं।

(उपगुप्त का प्रवेश।)

उपगुप्त जबतक व्यक्ति अपने लिए जीता है तबतक वह बंदी ही रहता है। आकांक्षा की परिधि सीमित है, परंतु उसकी व्याप्त बड़ी भयंकर होती है, महाराज ! मकड़ी के जाल के समान उसमें फसकर कोई जीवित नहीं रहा है।

अशोक मिश्र उपगुप्त ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ मति !

उपगुप्त क्याण हो ! मैं कसिंग-कुमार से मिलना चाहता हूँ ।  
 प्रगोष्ठ महामात्य ने मुझे अभी बतसाया था, लेकिन मुझे  
 लगता है कि कुमार से अधिक मुझे आपकी मंत्रणा की  
 आवश्यकता है ।

उपगुप्त आपको मेरी मंत्रणा की आवश्यकता है ?  
 प्रगोष्ठ हाँ भते !

उपगुप्त वृद्धो क्या जानना चाहते हो ?  
 प्रगोष्ठ भति ! क्या कोई ऐसी शक्ति है जो बिना नाश किये

विरोधी को पराजित कर सके ।  
 उपगुप्त किसीको पराजित करने की भावना ही मनुष्य की

सबसे बड़ी दुर्बलता है महाराज ।  
 प्रगोष्ठ (बोहराता हुआ) किसीको पराजित करने की

भावना ही मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है । किसीको  
 पराजित करने की भावना ही मनुष्य की सबसे बड़ी  
 दुर्बलता है ।

(कई बार बोहराता है ।)

उपगुप्त सम्राट् रात बीत रही है । क्या मैं --  
 प्रगोष्ठ (एकदम) रात बीत रही है । सच क्या रात बीत रही

है ? भते ! आपने कितनी मुस्करात कही है । रात बीतती  
 है तभी प्रमात होता है ।

उपगुप्त लेकिन आज का प्रमात किसी की मृत्यु का संदेश  
 लेकर आ रहा है सम्राट् ।

प्रगोष्ठ आप कसिंग के पुत्रराज की बात कर रहे हैं भते । वह

जाती हो मन उठना ही बिरस होता है। (निश्वास) न जाने यह युद्ध कब समाप्त होगा ? मरे हुए सोंगों की संख्या गिनते-गिनते ऐसा लगने लगा है कि जैसे हम सब मरे हुए हैं क्योंकि उनके सामने जो खिंते हैं उनकी तो कोई गिनती ही नहीं है।

रेबा (मुस्कराकर) महारानी ! सुना है कि जब प्रत्येक बड़ा व्यक्ति इस सोक में धाता है तो बिधाता उसे मृत्यु का रज सुनाकर मेजते हैं।

काव्याकी (हँसकर) ओह यह बात है। तभी ठा इसे मृत्यु सोक कहते हैं। मैं आज महाराज का बस्यबाद दूंगी कि वह इतने भावमियों का बच करवाकर बिधाता का काम हल्का कर रहे हैं। (सहसा हँसी पियाज में बरस जाती है) पर-पर रेबा मुझे तो लगता है-

(उठकर लड़ी हो जाती है पीर जातायन से बाहर झंकती है)

रेबा आपका क्या लगता है, महारानी !

(बह भी उठती है)

काव्याकी यही कि बिधाता का काम मनुष्य को नहीं करना चाहिए। युद्ध बंद होना चाहिए।

रेबा कलिंग का युद्ध तो आज समाप्त हो गया महारानी ! युवराज के बंदी हो जाने के बाद कौन बधा है जो भव मेरी-धोप करेगा। जो युद्ध के भोजन बन सकते हैं वे मनुष्य तो सब पहले ही मर चुके हैं।

कारवाही ठीक है देवा परंतु कलिंग-विजय हो जाने से युद्ध बंद होने की कोई धाया नहीं है। धर्मी सिंहास-विजय रोप है। फिर कलिंग तथा सिंहास के बीच में कितने ही भोर देग है। उनमें कितने ही साख मर-मारी बसते हैं। उन सबकी हत्या उक्त ! बिधाता इस संसार को एक बार ही क्यों नहीं मज्ज कर देता।

देवा (कोई-गोई) हा महारानी ! मनुष्य की मनुष्य द्वारा हत्या करवाकर न जाने विधाता को क्या रख धाता है। कारवाही (दूर अंकुशों हुई) मुझे तो कभी-कभी ऐसा सपना है जैसे बिधाता है ही नहीं --

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी महारानी की जय हो !

कारवाही क्या है ?

प्रतिहारी सम्राट पधारनेवासे हैं महारानी।

कारवाही बहुत प्रसन्न।

(प्रतिहारी सीट जाता है)

कारवाही सम्राट पधार रहे हैं। देवा तुम बराबर के प्रकोष्ठ में टहरो। हो सकता है कि तुम्हारी आवश्यकता पड़े। कुछ समय पूर जलक गिरि से समाचार मिला था कि वह आज बहुत उद्विग्न है। यूँ तो वह कई दिनों से स्थिर है पर आज मुना है कि कलिंग के युवराज ने उन्हें बहुत विचलित कर दिया है।

देवा ओ धाता देख !



(जाती है। महारानी बातामन से हठकर मन के द्वार को धीरे बंद करती हैं, तभी दूसरी ओर से सम्राट् प्रशोक प्रवेश करते हैं। मुक्त-मुद्रा बहुत प्रसन्न न होकर भी स्मित नहीं है। परन्तु सुनकर महारानी मुड़ती हैं। मुस्कराती हैं।)

कात्याकी महाराज की आज्ञा हो। मन्त्रारि। आज तो बहुत असमय हो गया है। महाराज का चित्त तो प्रसन्न है ? प्रशोक (पास आकर) मुद्रा में चित्त की प्रसन्नता सापेक्ष होती है देवि ! मैं स्वयं नहीं जानता कि मैं प्रसन्न हूँ या चिन्तित। विशेषकर जो कुछ मैं आज कर आया हूँ उसने मुझे बुद्धि में डाल दिया है।

(शैया पर बैठ जाते हैं, महारानी खड़ी रहती हैं।)

कात्याकी आज आप क्या कर आये हैं, मैं सुन सकती हूँ ? रेवा कह रही थी कि कलिय के मुखरज बंदी हो चुके हैं। प्रशोक वही तो। उसीकी तो बात है।

कात्याकी क्या बात है। उसका पकड़ा जाना तो एक तरह से अज्ञात ही हुआ। मुद्रा समाप्त हो गया। उस दिन से मरने-जीनेवालों की संख्या सुनते-सुनते भी ऊब उठता था।

प्रशोक तुम्हारा भी भी ऊब उठता था ?

कात्याकी सभीका ऊब उठता होगा स्वामी ! वह बात ही ऐसी थी। शास्त्रों की छटपट असहाय भावनों की कल्पना, चित्तार्थों से उठता हुआ आर्हों का धुंधला उनके

कर मंदराता हुआ जयपीप ! तब कुछ ऐसा लगता था  
जैसे—

प्रसन्न जैसे एक बरों गई देवि । बताया उस जैसा लगता  
था ?

काश्मीरी जैसे किसी माँ के दहलीज़ मुख की दासपाना का  
जबूत निश्चय रहा हो ।

(बहकर रहते कांप उठनी हैं । मगधराज के मुख पर कई  
रंग घाल हैं खोर जाने हैं ।)

पत्नी (पीसा रह) टीक लगा ही लड़ि । शीतल शीतल  
मम भी लगता था ।

बंदी का सिर नहीं मुका सके। खोपड़ियां ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड़ धमसान में भूमा करते हैं। लेकिन वह वीर पुरुषों का मार्ग नहीं है।

कात्याकी (अकित फुसफुसाती है) एक बंदी का सिर नहीं मुका सके। खोपड़ी ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड़ धमसान में भूमा करते हैं लेकिन वह वीर पुरुषों का मार्ग नहीं है वीर पुरुषों का मार्ग (एकदम) फिर आपने क्या किया ?

अज्ञेय फिर मैंने उसको दिये गए मृत्यु-दण्ड की भाशा वापस ले ली।

कात्याकी (धीर भी अकित) क्या क्या कहा आपने ?

अज्ञेय : यही कि मैंने मृत्यु-दण्ड की भाशा वापस ले ली और उसका राज्य उसे सौटा दिया।

(अचरज से रानी के नेत्र फैल जाते हैं। हृत्माय्य-सी वह कभी सभ्राट् को, कभी वीरक के कपित प्रकाश को देखती है। फिर फुसफुसाती है।)

कात्याकी (जैसे आपने से बोसती है।) मृत्युदण्ड की भाशा वापस ले ली। उसका राज्य उसे सौटा दिया। जिस राज्य के लिए साखों मानवों का रक्त बहा साखों ससनाओं की सुहाग की साखी पुछी साखों माताओं की गोपी सूनी हो गई। जिस राज्य के लिए नगर वीरान हो गये भवन खंडहर बन गये पृथ्वी और आकाश धनाओं धान-हियों धनाहत्तों की आहों में काँप उठे, वही राज्य आपने

उसे सोटा दिया। इतना बड़ा मरण-स्थीहार मनाकर,  
इतनी बड़ी दानवी सोमा के बाप—

प्रयोग (अनभूत-सा एकदम) हाँ हुआ तो यही पर नहीं  
जानता यह ठीक हुआ या गलत। घायद गमत हुआ। पर  
न जान यह सब कैसे हाँ गया? मुझे स्वयं विद्वान्त नहीं  
आता। घायद तुम्हें भी नहीं आ रहा है। बात कुछ ऐसी  
ही है। मगध का प्रतापी सम्राट्—

बादशाही (एकदम) नहीं नहीं सम्राट्। मैं यह नहीं कहती।  
मैं तो मैं तो केवल यह जानना चाहती थी कि यह सब  
क्या हो गया?

प्रयोग (मुस्कराकर) और क्यों हो गया? यह नहीं जानना  
चाहती देखि ठीक यही प्रश्न मैं अपने से पूछ रहा हूँ कि  
प्रयोग तूने यह सब क्यों किया?

बादशाही (चरित) क्यों किया?  
प्रयोग (बुद्धता) क्योंकि मैं कलिंग के युपराज से पराजित  
होना नहीं चाहता था। क्योंकि मैं उनका सिर मुकाना  
चाहता था कान्ता नहीं चाहता था।

बादशाही फिर मुकाना चाहते थे कान्ता नहीं चाहते थे।  
स्वामी आज बीन-री भाषा बोल रहे हैं। दस दिन से  
जा कुछ मैं गुन रही थी वह सब और जबान की भाषा  
थी। आज समान म बसत-विराग का राग बने छिड़  
या?

प्रयोग देखो व। मगध साम्रज्य है। पर—

महत्वा

कांक्षी हूँ। मैं विजय चाहता हूँ किसी भी सूर्य पर विजय। मेरे नाम से गांधार से लेकर केरल तक कामरूपा से लेकर सौराष्ट्र तक सारा देश कांपता है। मैंने कस्मि को पराजित करने का निश्चय किया है। उस कस्मि को जिसने क्षत्रियतासी मंदों की क्षत्रि को लंड-लंड कर दिया था जिसने मेरे प्रतापी पिता और पितामह के सामने नतमस्तक होने से इन्कार कर दिया था जिसने सोलह राज्यों को उखाड़ फेंकनेवासे महामति चाणक्य की बुद्धि को चुनौती दी थी उसी कस्मि को मैं मौर्य-साम्राज्य में मग्न कर देना चाहता हूँ। उसके पराभव के बिना मौर्य साम्राज्य का एकीकरण असम्भव था। इसी बात के लिए मैंने उसके बैभव को धूल में मिला दिया। उसके शरीर को लंड-लंड कर डाला—पर—(निश्वास)

कारुणाकी पर क्या स्वामी ।

अशोक पर मैं उसे अपना नहीं बना सका। मेरे हृदय में ऐसी ज्वाला भुलस रही है जो जय-जयकार का ७ करती हुई मानो मुझसे कहती है—अशोक जो कुछ किया है एक दिन उसके लिए तुम धूल के भाँसू ८। तुम्हारी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी (एकजम) नहीं यह स्थिति नहीं चाहता। मैं उसे अपना ११। १२। मैं गीदड़ बमकर इमशान में लोपड़ी नहीं १३। १४। मैं जोतना चाहता हूँ ।

कारुणाकी स्वामी । स्वामी । आप अस्वस्थ हैं ।

असोक नहीं जानता कि मैं अस्वस्थ हूँ या स्वस्थ पर मैं हारना नहीं चाहता। इसलिये मैंने कुमार को क्षमा कर दिया और उसका राज्य उसको लौटा दिया। यही नहीं मैंने एक और निश्चय किया है।

कादवाको क्या निश्चय किया है ?  
असोक मैंने निश्चय किया है कि यदि संप्रमिता चाहे तो युवराज को अपना पति वरण कर सकती है।

कादवाको (छगी-सी) स्वामी स्वामी बैठ की तपती दोपहरी में सायन की पूर्वी वायु के झोंके ! रौरव नरक में स्वर्ग की सुसंध ! विदास नहीं जाता देख !

असोक विवाह करने के लिए अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी दक्षि ! परंतु मैं जानना चाहता हूँ कि मैंने यह ठीक किया न ? मेरे अंतर में कोई दुःखता तो नहीं घुस बैठी। अभी भी समय है। महेंद्र और मिथु उपगुप्त युवराज को लेने गये हैं। राधागुप्त संप्रमिता को लेने गये हैं। वे जाते ही होंगे। उन सबके जाने के पक्ष में अपनी दुःखता को जान लेना चाहता हूँ। (किसीके जाने का स्वर) ओह वे जा गये।

कादवाको कौन है ?

(प्रतिहारो का प्रवेश)

प्रतिहारो महागज की जय हो। सेनापति ने मदेश भेजा है।  
असोक सेनापति ने मदेश भेजा है ? क्या ?  
प्रतिहारो उन्होंने अभी कुछ समय पूर्व रणभूमि से एक विजय

को बंदी बनाया है ।

अशोक मिश्रगुणी को ? क्यों ? वह वहाँ क्या कर रही थी ?  
प्रतिहारी देव ! जिस समय सैनिकों ने उसे देखा तो वह रण  
भूमि में घायलों की परिचर्या करती हुई घूम रही थी ।  
जब उन्होंने उसे घेर लिया तो वह धबकाई नहीं हँसकर  
बोली—मुझे बंदी बनाओगे ? मैं तो स्वयं आ रही थी ।  
मैं तुम्हारे सम्राट् से मिलना चाहती हूँ ।

अशोक सब उसने ऐसा कहा ! वह डरी नहीं !  
प्रतिहारी नहीं बेव ! डर तो उससे स्वयं डरता है । उसकी  
आँखों में गहरा विश्वास भरा हुआ है । सैनिकों ने जब  
उससे बचने को कहा तो वह बोली—

कास्बाकी क्या बोली ?

प्रतिहारी वह बोली — मैं तुम्हारे साथ बभ्रुणी पर तब जब  
घायलों की परिचर्या पूरी हो जायगी । आप लोगों को  
बहुत जल्दी हो तो आप मेरी सहायता कर सकते हैं ।

कास्बाकी फिर फिर क्या हुआ ?

प्रतिहारी फिर सम्राट् के सैनिकों ने उसकी सहायता की ।

कास्बाकी क्या—क्या सैनिकों ने उसकी सहायता की ?

अशोक मेरे सैनिकों ने घायलों की सेवा की । थोड़ा किस्ती  
अदभुत बात है ? किस्ती शक्ति है उस मिश्रगुणी में ?

कास्बाकी जो सैनिकों का हृदय जीत ले उसकी शक्ति साम्रा  
ज्य नहीं हो सकती सम्राट् ?

अशोक प्रतिहारी हम उससे मिलना चाहते हैं । तुम शीघ्र

जाकर उसे मे घाघ्रो घोर देखो पूरे घाघर के साथ  
सामा ।

प्रतिहारी ओ भाजा देव ।

(झुककर प्रणाम करता है और जाता है ।)

अशोक क्या विचार है देवि वह भिक्षुणी बौन हो सक्ता है ?

वह शस्त्रों से बिस्तुल भी नहीं डरती । उस्ता शस्त्रधारियों  
को उसने अपने बग में कर लिया ।

कादवाकी मुझे सगता है कि इसमें कोई रहस्य है ।

अशोक रहस्य ? इसमें क्या रहस्य हो सक्ता है देवि ?

कादवाकी उसने आपसे मिलने की इच्छा प्रगट की है न ।

अशोक हाँ-हाँ वही तो प्रतिहारी कहता था ।

कादवाकी सम्राट् उस रहस्यमय भिक्षुणी का अरामय में  
इस प्रकार रणभूमि में पूमाना साधारण बात नहीं है ।  
यह अथर्व्य बलिग व राजकुल या राजतंत्र से संबंध  
रहती है ।

अशोक तो

कादवाकी तो क्या सम्राट् ! यह प्रतिगोप चाहती है और जब  
नारी प्रतिगोप सेने की बात गोप सेतो है तो फिर वह  
बिगी बात की पिता नहीं बन्ती । मुझे इसमें पश्यत्र जान  
पड़ता है । सम्राट् गायमान रहें ।

अशोक (मुत्तरावर) भिक्षु ठीक बहुत से कि राजकुमवासों  
की शरणावसी बहुत कम जाती है । यथय विभाग का  
पश्यत्र प्रतिगोप इनके प्रतिरिक्त उद् घोर कृप्य नहीं



सुम्हटा

(प्रतिहारी का प्रवेश)

अशोक क्यों ? क्या भिक्षुणी आ गई ?

प्रतिहारी नहीं महाराज ! भिक्षुणी तो नहीं एक भिक्षु है ।

अशोक भिक्षु, इस समय ! कर्मिण में क्या भिक्षुओं और भिक्षु

णियों के प्रतिरिक्त और कोई नहीं बचा है ?

कारवाकी सुना है सम्राट् जो मर नहीं सके वे सब-के-सब

पीले वस्त्र धारण करके भिक्षु बन गए हैं ।

अशोक जान तो कुछ ऐसा ही पड़ता है वेकि ! अन्ध प्रति-

हारी ! ये भिक्षु कसे हैं ?

प्रतिहारी बड़े ऋषी हैं ।

अशोक ऋषी ! क्या तुमसे शङ्क पड़े ?

प्रतिहारी सम्राट् जमा करें, मैंने जब उनसे डरने को कहा तो

वे शङ्के ही नहीं मुझे मारने भी दौड़े ।

अशोक मारने दौड़े ?

कारवाकी महाराज ! सावधान रहें । ऊपर जो खांति बिस्तार

देती है उसके नीचे ज्वालागुली बघक रहा है ।

अशोक (प्रतिहारी से) अन्ध उन्हें घाने दो ।

प्रतिहारी जो घाना ।

(जाता है)

अशोक वेकि ! ज्वालागुली मेरे भी भीतर बघक रहा है ।

देखू, शायद भिक्षु कोई राह सुझ सके ।

कारवाकी जो स्वयं राह से भटका हुआ है, वह दूसरे को क्या

माग दिखायगा ?

धनोक वह न सही उसकी असफलता अवश्य मार्ग दिखायगी ।

(मिशु का प्रवेश)

धनोक भते ! मैं प्रणाम करता हूँ ।

मिशु प्रणाम की कोई आवश्यकता नहीं है सभा । आवश्यकता है सतर्कता की । कुछ न चेसे खेनियाँ पाये पन्नों के नीचे छद्म छिपाये फिरते हैं ।

धनोक (एकदम) क्या कहा ? कौन हो तुम ! (ध्यान से बैठ कर) ओह ! तुम हो बंधुजीव । समझ ! तुम झोप करके मिशुओं को बर्नाम करते फिरत हो ।

कादवाही अरे तुम तो पहचाने भी नहीं जाते ।

मिशु दबी ! बंधुजीव को कोई पहचान से तो फिर यात हो क्या है । ठासमी में सबको व्यक्ति मिशु बंधुजीव से प्रश्रया ग्रहण करने को प्रस्तुत हैं ।

कादवाही फिर यहां क्यों आये ? हमें प्रश्रया देने पर हम इतने मोम नहीं हैं । हम विजयी हैं । जाओ जाकर उन्हें ही दींगा दो ।

मिशु मैं द तो देता पर स्वयं बपटी होकर उनके बपट को पहचान गया हूँ । इसलिए सभाद से गमाह करने आया हूँ ।

धनोक बोसो क्या कहना चाहते हो ?

मिशु यही कि जो प्रतिशोध के लिए प्रश्रया ग्रहण करना चाहते हैं उन्हें प्रणाम दिया जाता है या प्रार्थना किया

जाता है ।

अशोक तुम्हारे पास प्रमाण है ?

मिक्षु बंधुजीव का मस्तिष्क भले ही आकाश को छूता हो पर उसके पैर धरती पर सगे हैं । सम्भाद सावधान रहें । अभी जो एक मिश्रणी भाने बासी है—

काश्वाकी (एकवचन) हां हां भानेबासी है । कौन है वह ?

अशोक वही मिश्रणी जो युद्ध भूमि में घायलों की सेवा कर रही थी ?

मिक्षु जी हां वही । वह घायलों की सेवा नहीं कर रही थी, सम्भाद से मिलने का मार्ग सरल कर रही थी । मैंने उसे उसके असली रूप में देखा है ।

अशोक कौन है वह ?

मिक्षु ठीक-ठीक पहचान नहीं पाया सम्भाद । पर है वह किसी बड़े कुल की । उसका रूप इस बात का साक्षी है । कम जब मैंने उसे देखा तो वह सम्भारण मारी के रूप में थी और सोसनी के अशमरे और अर्थ विक्षिप्त व्यक्तियों को युद्ध के लिए भड़का रही थी ।

अशोक सच ! पर वह मिश्रणी क्यों बनी ?

मिक्षु इसलिए कि वह आप तक आ सके और—

काश्वाकी और—

मिक्षु बंधुजीव की विज्ञा उन शत्रुओं का सम्भारण नहीं कर सकती देवि ।

अशोक हमारी विज्ञा कर सकती है । मिश्रणी हमारी हत्या

करना चाहती है ।

मिशु सभाद ने ठीक समझा ।

प्रयोग (तोष) सभाद सदा ठीक समझते हैं और यह भी समझते हैं कि हरियारे से अपनी रक्षा बच की जाती है ।

मिशु आमतौर पर सभाद । भावश्यकता पड़ने पर सनिब' मिस सके इसका प्रयोग कर पाया है । अच्छा प्रणाम । अब जाकर प्रव्रज्या देनी शुरू करता है । दुःख यही है कि खंड गिरि के लिए काम बहुत हो गया है ।

(उठता है)

प्रयोग (एकदम) बंधुजीव !

मिशु सभाद !

प्रयोग (सहसा चीन हो जाते हैं)

मिशु क्या भासा है सभाद !

प्रयोग (चौकचर) कुछ नहीं जाओ ।

मिशु जो भासा । (मुड़ता है)

प्रयोग (पुकारता है) बंधुजीव ! प्रव्रज्या का नाम पात्र राध दस सनता है ।

मिशु सभाद ! प्रव्रज्या रात में नहीं दी जाती ।

प्रयोग तो जाओ ।

(बंधुजीव का प्रस्थान । प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी सभाद की जय हो । मिशुगो उपस्थित है ।

\* रत्नबंध कर प्रस्तुत करते समय बंधुजीव का दर्शन दोष का लक्ष्य है ।

अशोक उसे धामे दो। और सुनो तुम सब बाहर छहरो।  
प्रतिहारो ओ धात्रा।

(भ्रुकुकर प्रणाम करता है और जाता है)

काव्याकी सभाद्। भव तो विश्वास करेंगे कि मिश्रुणी  
किसी पदार्थ की सूत्रधार है। वह प्रतिशोध सेने  
निकली है।

अशोक हम तुम यहीं हैं प्रिये। देखते हैं कि वह कसा और  
किस प्रकार प्रतिशोध लेती है।

(मिश्रुणी का प्रवेश। पीत वस्त्र किञ्चित् ध्याम वरुं  
आकर्षक नयन कलामय भ्रूषंक और विश्वास भरनेवाली  
मुद्रा। सगता ह किसी सुंदरी ने नाटकीय रंगमंच के लिए  
मिश्रुणी का रूप चारण किया है। सभाद् उसे देखते हैं।  
कृष्ण सोचना चाहते हैं पर सहसा सभाद् की पद-भर्याबा  
का ध्यान करके वृष्टि घुमा लेते हैं। रानी काव्याकी  
आश्चर्य से उसके भग-भग को देखती है और देखतो रू  
जाती है। कई क्षण बीत जाते हैं तब सहसा सभाद् समल  
कर बोमते हैं।)

अशोक तुम वीन हो ?

मिश्रुणी ओ सभाद् देख रहे हैं एक मिश्रुणी।

अशोक (कठोर होने की चेष्टा) इस समय रगभूमि में क्या  
कर रही थी ?

मिश्रुणी वह भी सभाद् सुन चुके हैं।

अशोक (अधिकार) सभाद् तुम्हारे मुख से सुनना चाहते हैं।

जो दिखाई देता है वही सदा सत्य नहीं होता ।

मिथुली (मुस्कराकर) सम्राट् सत्य और झूठ का निराय  
करना भी जानते हैं ?

कास्बाही मिथुली ! सम्राट् से विवाद न करने प्रश्न का  
उत्तर दो ।

मिथुली (उसी तरह मुस्कराकर) ओह ! महारानी का सम्राट्  
की घबहेसना देखकर दुःख हुआ । परंतु महारानी ! प्रश्न  
का उत्तर न देने की मेरी कोई इच्छा नहीं है । मैं बस  
यह जानना चाहती हूँ कि आप लोग मुझसे और मेरे कामों  
में दिलचस्पी क्यों लेते हैं ?

कास्बाही क्योंकि तुम शत्रु-मर्दा की हो । तुम्हारा कुछ उद्देश्य  
हो सकता है ।

मिथुली (हसकर) उद्देश्य ! भग्न कुछ उद्देश्य हो सकता है ।  
शत्रु का कुछ उद्देश्य हो सकता है । महारानी ! तुमने  
कुछ गमन नहीं गमना । भग्न उद्देश्य है ।

अगोश (एकदम) क्या उद्देश्य है तुम्हारा ? सच बताओ क्या  
तुम प्रतिशोध मनवाई हो ?

मिथुली (सहसा जागर) किंगवा प्रतिशोध सम्राट् ?

अगोश अपने देश का प्रतिशोध । बनिय को पराजित करने  
का प्रतिशोध (आयेन) लेकिन तुम भूलती हो । तुम प्रति  
शोध नहीं ले सकती । तुम मरी एरिया नहीं कर सकती  
- मैं- मैं -

(बटार सीधे सेता है)

मिथुरी सन्नाह ! हत्या करते-करते आप सिधाय हत्याघों के  
घोर कुछ नहीं सोच सकते । आप उस बिस्ती को तरह हैं  
जो स्वप्न में भी छिछरे ही देखती है ।

कास्बाकी मिथुरी ! तुम भारत-सन्नाह से बातें कर रही  
हो ।

मिथुरी देख ! सत्य कहने के लिए कुछ नहीं सोचा जाता ।

(मुड़कर) सन्नाह ! मैंने कहा था कि मेरे धाने का वह दम  
है । वह उद्देश्य है आप तक कस्बिग के निवासियों का  
संदेश पहुंचाना ।

अशोक कस्बिग के निवासियों का संदेश ? क्या अभी कस्बिग  
में संदेशा भेजनेवाले बचे हैं ?

मिथुरी बचे क्यों नहीं हैं । सन्नाह अभी वे तारिया रोप है  
जिनके सुहाग की आली रक्त को सासी बनकर भरती पर  
बह रही है जिनकी कोख के रक्त गिर घोर गीदड़ों के  
मोजन बने हुए हैं । अभी वे बूझ बचे हैं जिनके नेत्र हैं पर  
दृष्टि नहीं है जिनके धरीर हैं पर प्राण नहीं है, जिनके  
कान हैं पर वे सुन नहीं पाते जो तिम-तिमकर प्राणदान  
कर रहे हैं—

अशोक मिथुरी मिथुरी बंद करो यह शब्द-आस-

मिथुरी (अनसुना करके उसी तरह) सन्नाह ! अभी वे बासक  
भी बचे हुए हैं जो महानाथ की दानवी-सीसा का रक्त  
पीकर बढ़ रहे हैं । अभी वे खंडहर नष्ट नहीं हुए हैं जिनमें  
बसनेवाले उस्तू और भगवावड़ दिमरास आपका गुणगान

करते रहते हैं। सम्राट् ! इन सबने मुझसे कहा है कि मगध के उस मत्स्याधारी राजा से बहू बेना मरण तो संसार का नियम है उसके लिए उसने इतने प्रयत्न क्या किये। यदि वह जीवन के लिए इससे दशमांश दक्षिण भी लर्प करेगा तो संसार विधाता को भूत जाता।

मगध (चञ्चित) भिक्षुणी भिक्षुणी !

भिक्षुणी मैं यही बहना चाहती थी। मैं यही बहने चाई थी।

मगध (ओया-ओया) भिक्षुणी तुम यही बहने चाई हो।

तुम प्रतिशोध लेने नहीं चाई। नहीं तुम मूठ बोल रही हो। तुम भवन्त्य प्रतिशोध लेने चाई हो।

भिक्षुणी मैं प्रतिशोध लेने चाई हूँ। किसका प्रतिशोध, कसा प्रतिशोध। सम्राट् तुम यदि यह समझते हो कि तुमने कनिगवासियों का नाश किया है तो तुम घूँस करते हो। तुमने उनका नहीं घपना नाश किया है। पराजय उनकी नहीं, तुम्हारी हुई है। कनिग हारपर भी जीत गया है। तुम जीतकर भी हार गये हो।

मगध ये जीतकर भी हार गया हूँ --

भिक्षुणी हाँ सम्राट् ! तुम जीतकर भी हार गये। तुमने जीवन का नाश किया है और आयुष्य का नाश करनेवाले गंगा पराजित होते हैं।

बादशाही भिक्षुणी ! तुम्हारे बन्धु पोस हैं पर तुम्हारी पाली में घाग है।

भिक्षुणी महाराज ! पीन पशुओं का धर्म निर्विद्वता नहीं



मिसुरणी सन्नाह ! हत्या करते-करते आप सिवाय हत्याओं के और कुछ नहीं सोच सकते । आप उस बिल्ली को तरह हैं जो स्वप्न में भी छिछड़े ही देखती है ।

काश्वाही मिसुरणी ! तुम भारत-सन्नाह से बातें कर रही हो ।

मिसुरणी देख ! सत्य कहने के लिए कुछ नहीं सोचा जाता ।  
(मुड़कर) सन्नाह ! मैंने कहा था कि मेरे आने का उद्देश्य है । वह उद्देश्य है आप तक कस्मिन् के निवासियों का संदेश पहुंचाना ।

असोक कस्मिन् के निवासियों का संदेश ? क्या अभी कस्मिन् में संवेष्टा भेजनेवाले बचे हैं ?

मिसुरणी बचे क्यों नहीं हैं । सन्नाह अभी वे मारियों घोप हैं जिनके सुहाग की लाली रक्त की लाली बनकर भरती पर बह रही है जिनकी कोख के रत्न गिद्ध और गीदड़ों के भोजन बने हुए हैं । अभी वे बूढ़ बचे हैं जिनके नेत्र हैं पर दृष्टि नहीं है जिनके शरीर हैं पर प्राण नहीं हैं जिनके कान हैं पर वे सुन नहीं पाते जो तिल-तिलकर प्राणदान कर रहे हैं—

असोक मिसुरणी मिसुरणी बच करो यह सम्भवज्ञा

मिसुरणी (अनसुना करके उसी तरह) सन्नाह ! अभी वे बासक भी बचे हुए हैं जो महानाथ की दानवी-सीसा का रक्त पीकर बढ़ रहे हैं । अभी वे सबहर मष्ट नहीं हुए हैं जिनमें बसनेवाले उस्तू और भमगादड़ दिनरात आपका गुणगान

करते रहते हैं। सम्राट् ! इन सबमें मुझसे कहा है कि मगध के उस अस्याधारी राजा से कह देना मरण तो संसार का नियम है उसक लिए उसने इतने प्रयत्न क्यों किये। यदि वह जीवन के लिए इससे दशमांश शक्ति भी लर्भ करवा तो संसार बिधाता को भूल जाता।”

अशोक (अकित) मिथुली - मिथुली !

मिथुली मैं यही कहना चाहती थी। मैं यही कहने आई थी।

अशोक (सोपा-सोपा) मिथुली तुम यही कहने आई हो।

तुम प्रतिशोध लेने नहीं आई। नहीं तुम झूठ बोल रही हो। तुम अवश्य प्रतिशोध लेने आई हो।

मिथुली मैं प्रतिशोध लेने आई हूँ। जिसका प्रतिशोध बैसा प्रतिशोध ! सम्राट् तुम यदि यह समझते हो कि तुमने कलिंगवासियों का नाश किया है तो तुम भूल कर रहे हो। तुमने उनका नहीं अपमा नाग किया है। पराजय उनकी नहीं तुम्हारी हुई है। कलिंग हारकर भी जीव गया है। तुम जीतकर भी हार गए हो।

अशोक मैं जीतकर भी हार गया हूँ --

मिथुली हाँ सम्राट् ! तुम जीतकर भी हार गये। तुमने जीवन का नाश किया है और जीवन का नाग करनेवाले मनु पराजित होते हैं।

आदवादी मिथुली ! तुम्हारे वस्त्र पीले हैं पर तुम्हारी बाली में धाग है।

मिथुली महारानी ! पीले वस्त्रों का अर्थ निष्कपता नहीं

है और क्रिया में सदा अग्नि होती है। अग्नि जीवन की शर्त है। वह प्रकाश भी देती है और जलाती भी है। यह दूसरी बात है कि कुछ लोग अपने-आपको जला सेते हैं कुछ अपनी पुर्वसत्ता को।

काश्याकी भिक्षुणी। अग्नि जीवन की शर्त हो सकती है पर शब्दबाल सत्य की शर्त नहीं है। वाक-चातुरी से उद्देश्य पूरे नहीं हुआ करते।

भिक्षुणी जानती हूँ महारानी। उद्देश्य वाक-चातुरी से नहीं कर्म चातुरी से पूरे होते हैं पर बंदिनी को कर्म करने को स्वतन्त्रता कहाँ है ?

अशोक तुम बंदिनी हो ?

भिक्षुणी मेरा यहाँ होने का यही अर्थ है।

काश्याकी (कठोर) ठन तुम यह भी जानती होगी कि बंदिनी के साथ कसा व्यवहार किया जाता है।

भिक्षुणी जानती क्यों नहीं। मगध में उनका सिर उड़ा दिया जाता है। (मुड़कर) कटार उठाएँ, सभ्राट् ! उठाएँ ! मैं तैयार हूँ।

(क्षीप्रता से आगे बढ़कर सभ्राट् के सामने बैठ जाती है)

काश्याकी (काँपकर) भिक्षुणी !

अशोक (काँपकर) भिक्षुणी-भिक्षुणी ! यह तुमने क्या कहा ?

भिक्षुणी ओ सत्य है।

अशोक ओ सत्य है। मारी का सिर उड़ाना सत्य है ? मारी को

हत्या करना सत्य है ? मैं नारी की हत्या कर सकता हूँ ?  
मैं नारी पर हाथ उठा सकता हूँ ?

मिसुली नहीं जानती थी कि मगध के सम्राट् क्रूर होने के साथ बोंगी भी हैं। धमी तो वह बटार दीख रहे थे और अभी नारी-हत्या के विचार मात्र से ही उनके कोमल हृदय पर चोट लगी पर मैं पूछती हूँ (आवेश) बलिग-युद्ध में हठाहत सस-सदा धमाके सैनिकों के क्या माँ बहन बहू बेटी नहीं थीं ? क्या वे माँ बहन बहू बेटी नारी नहीं हैं ?

आत्मा की फिर वही आवाज फिर वही दण्ड-आस ।

मिसुली महारानी ! सत्य को बार-बार दण्ड-आस कहकर भठसाया नहीं जा सकता । मैं कनिग की आहत आत्मा की प्रतिनिधि हूँ । मुझसे आप बीछा के मधुर संगीत की आवाज नहीं कर सकतीं । आप तो मारी हैं । आप मेरे माप पलिये । मैं आपकी निराळगी कि कनिग व हर मगर और गांव में ऐसी असंख्य नारियाँ हैं जो जीत-जी मोन हो गई हैं । जिनकी आत्मा भुलम गई है (मुदकर) सम्राट् क्या ही अच्छा हो कि आप उनसे सिर काटकर उन्हें इस पातना में मुक्ति दें । वही आपसे इनका रक्त बहाया है वही पोंड़ा और बहाइए । इस रक्त-यज्ञ को पूरा कीजिए । अब तक आपसे जो कुछ लिया था वह सत्या यो पर अब जो कुछ करेगा वह उनपर उपहार होगा ।

पतोच (बोचकर) भिद्यगी- भिद्यगी बम करो बम करो ।  
ऐसा सगता है जमे

(सहसा सिर पकड़कर बैठ जाते हैं। रानी बौझती है)  
 कारुवाकी महाराज ! महाराज क्या बात है ! क्या आप  
 अस्वस्थ हैं ?

अशोक (समलकर) कुछ नहीं बेचि ! कुछ नहीं मैं स्वस्थ हूँ।  
 मुझे ऐसा लगा था जैसे मैंने वह बाणोपहसे भी सुनी है।  
 कस्मिन् के युवराज ने कुछ ऐसे ही कहा था।

मिथुराणी कस्मिन् का युवराज और क्या कस्मिन् की साधारण  
 मारी ! भाव सबकी भाषा एक है। भावना एक है। गति  
 मति सब एक है। सबका एक स्वर है—आपने मनुष्य को  
 नहीं शर्बों को नगरों को नहीं सबहरों को जीता है। आप  
 वनधान के सम्राट् हैं।

अशोक यही उसने कहा था। बिस्कुल यही। मैं मनुष्यों का  
 नहीं शर्बों का नगरों का नहीं सबहरों का सम्राट् हूँ।  
 (एकबल) मिथुराणी ! तुम ठीक कहती हो। मैंने नर-हत्या  
 की है। मैंने नगरों को सबहर बनाया पर जो नगरों को  
 सबहर बना सकता है क्या वह सबहरों को नगर नहीं बना  
 सकता ?

मिथुराणी नहीं बना सकता।

अशोक नहीं बना सकता। क्यों ?

मिथुराणी क्योंकि वह पराजितों में प्रतिशोध की घाग मड़का  
 बैठा है और जो प्रतिशोध की भावना जगाता है वह जीत  
 कर भी हार जाता है। सम्राट् ! शस्त्रों की जीत जीत  
 नहीं होती। अहाँ लोगों का इस प्रकार वध—मरण और

देख-निवासा हो ऐसा जीतना न जीतने के बराबर है ।

प्रश्नोक्त (बोहरस्ता हुआ) जहाँ सोगो का इस प्रकार बध—  
मरण और देख निवासा हो ऐसा जीतना न जीतने के  
बराबर है । जहाँ सोगों का इस प्रकार बध मरण और  
देख-निवासा हो (एकदम) भिद्युणी । तुम बसिंग की  
साधारण मारी नहीं हो । तुम अथवा किसी तत्त्वदर्शी की  
पुत्री हो । तुम मुझे बताओ कि क्या जीत का कोई और  
मार्ग भी हाता है ।

कादवाकी सभाद ! आप अब बहुत थक गए हैं विश्राम  
करिये । भिद्युणी से सवेरे बातें कर सकते हैं । मैं विश्राम  
दिताती हूँ कि मैं आदरपूर्वक इन्हें अपने साथ रखूंगी ।  
प्रश्नोक्त दबी डर गई जान पड़ती है । प्रश्नोक्त इस प्रकार  
व्यापित होनेवासा नहीं है और फिर भिद्युणी के पास मरे  
पायस मन पर अमृत वर्षा रह है । (मुहूर) हाँ देवि !  
क्या तुम जीत का कोई और मार्ग जानती हो ?

भिद्युणी सभाद मुझसे पूछते हैं ?

प्रश्नोक्त हाँ । कोई डर है ?

भिद्युणी है ।

प्रश्नोक्त क्या ?

भिद्युणी मैं सभाद के पानु-पण की हूँ ।

प्रश्नोक्त नहीं देवि ! अब मरा कोई पानु नहीं है । मने दुबराज  
को समा कर दिया है ।

भिद्युणी मुबराज को ?

अशोक हाँ कसिंग के युवराज को मैने क्षमा कर दिया । उस का राज्य उसको लौटा दिया । मुझे खेद है कि उसके पिता और दूसरे संबंधी मूढ़ में मारे गए । सुना है उसकी एक बहन बची है । पर अभी तक उसका कुछ पता नहीं लगा । और और यह अचरज की बात है कि उसका और तुम्हारा स्वर बहुत-कुछ मिलता है । बिचार भी वे ही है ।  
क्या भी कुछ-कुछ

भिक्षुणी (एकबचन) यह संयोग की बात है, सम्भाव । नहीं तो वहाँ कसिंग के युवराज और वहाँ उसके एक साम्राज्य नागरिक की पुत्री ।

अशोक यह तो और भी गौरव की बात है, भिक्षुणी । कसिंग की सब संतान इतनी भयहीन है । भय मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है । जो भय को जीत लेता है वह महान है । तुम भी महान हो । युवराज भी महान है । मैं भी महानता चाहता हूँ । मैं तुम सबका मित्र बनना चाहता हूँ इसलिए मैंने राजकुमार को क्षमा कर दिया ।

भिक्षुणी ठीक है सम्भाव परंतु

अशोक परंतु ! परंतु क्या ?

भिक्षुणी परंतु सम्भाव ! युवराज आपकी क्षमा ग्रहण नहीं करेंगे ।

अशोक युवराज मेरी क्षमा ग्रहण नहीं करेंगे ?

भिक्षुणी नहीं ।

अशोक नहीं ! भिक्षुणी तुम अवश्य रहस्यमयी हो । तुम कौन

हो ? तुम कैसे जानती हो कि युवराज मेरी दामा ग्रहण नहीं करेंगे और क्यों नहीं करेंगे ?

मिथुली क्योंकि वह वीर हैं और वीर पुरुष किसीकी दामा ग्रहण नहीं किया करते ।

अशोक (कांपकर) वीर पुरुष किसी की दामा ग्रहण नहीं किया करते । और पुरुष किसीकी दामा ग्रहण नहीं किया करते । यही यही उसने भी कहा था ।

मिथुली उसने ठीक कहा था और वह आपने वचन पर दृढ़ रहेगा । वह आपने द्वारा दी गई प्रार्थनों की मिसा नहीं लेगा ।

अशोक मेरे द्वारा दी गई प्रार्थनों का मिसा नहीं लेगा ?

मिथुली हां नहीं लेगा । अभी नहीं लेगा ।

अशोक (एकदम) कैसे नहीं लेगा । मैंने प्रारुद्ध का आना वापस न ली है । वह मेरा बंदी है । मेरी आज्ञा के बिना कोई उसका बाल नहीं छू सकता । मैं मरता हूँ ।

मिथुली (हसकर) सम्राट् को अपनी आज्ञा पर बहुत धमक है पर बलिग का युवराज उसकी सीमा से बहुत दूर है ।

अशोक (होप) इतना विश्वास । देखूंगा उसे कौन मारता है ?

मिथुली उसका उस वर्तमान मारेगा सम्राट् । बलिग का रक्त-यज्ञ अभी पूरा नहीं हुआ है । अभी महतिनिगा अभी रोप है । अभी कुछ और हृदय टूटने रोप है । अभी आपको अभी और पराजय देशकी रोप है । अभी युवराज का बलिगम रोप है ।

(आवेश और दृढ़ता की इस भविष्यवाणी से सम्राट् और



कसिंग की राजकुमारी हैं। मेरा बच करने के लिए  
मिथुणी बनी थीं और मैं समझता हूँ उन्हें काफी सफलता  
मिली है।

राधागुप्त (चकित) क्या क्या कहते हैं सम्राट्। (कटार  
झोंकता है) कौन है जो सम्राट् का बच करना चाहता है ?

अशोक (मुस्कराकर) कोई नहीं कोई नहीं महामात्य।

विष्णुगुप्त चाणक्य के शिष्य को इस प्रकार बरमा सोमा  
नहीं देता। राजकुमारी मनुष्य का बच करने की एक नई  
रीति जानती हैं। वह मर जाता है पर उसके प्राण नहीं  
निकलते। शायद तुम्हें विश्वास नहीं आ रहा है। पर आ  
जायगा। अब तो हम चल रहे हैं। आओ राजकुमारी।  
आओ देवी कास्वाकी। तुम भी आओ प्रभात होनेवाला  
है। बंदीगृह में एक नव-प्रभात होने दो।

(सम्राट् शीघ्रता से रंगमंच से बाहर जाते हैं। महारानी  
के साथ राजकुमारी भी उसी वृद्धता से जाती हैं। राधा  
गुप्त सबसे पीछे कुछ खोया-खोया-सा जाता है।)

राधागुप्त समस्त में नहीं धाता कि यह क्या हो रहा है। सब  
केस्र विचित्र अनिष्टसनीय अद्भुत

(जाता है और परधा गिर जाता है)

## तीसरा अंक

(रंगमंच पर रात्रि का गहन अंधकार। रह-रहकर पहल्वे को घुंकार उठती है। मंच पर एक छोटी सीपक का मंच प्रकाश हो रहा है। मानो वह वहाँ सिमिट गया है। कुछ क्षण बाद उस प्रकाश में एक छाया उभरती बिनाई देती है। वह एक युवक की छाया है जो एक घिसा पर मोन बठा हुआ किसी गहरी विचारधारा में निमग्न है। उसके दारो की छाया तंबू की एक भित्ति पर ऐसे पड़ रही है जैसे किसी कुशल चित्रकार ने विधास की चित्रित किया हो। वह कलिंग का राजकुमार है और प्रगोक की धाता से बबोगूह में मृत्यु की राह बैल रहा है। इसी समय एक छोटी से राजकुमारी सघमित्र। और उसके पाप बबोगूह का धातक अडगिरि वहाँ धाते हैं। राजकुमारी न निरस पर तब एक कासा वस्त्र पहना है। उसकी धात स्थिर है पर उसका मन कमलते हैं। अडगिरि का विराज दारो उसकी बड़ी-बड़ी मूर्तें और हाथ की बड़ी कटार मन में भय पडा करती हैं। धातक दोनों रंगमंच के प्रवेश-द्वार पर रुक जाते हैं। राजकुमारी मुड़ती है।)

मघमिना तुम बड़ी बाहर टहरो अडगिरि ! मैं एकांत

कसिंग की राजकुमारी हैं। मेरा वध करने के लिए भिक्षुणी बनी थीं और मैं समझता हूँ इन्हें काफी सफलता मिली है।

राघागुप्त (चकित) क्या क्या कहते हैं सम्राट्। (कठार खींचता है) कौन है जो सम्राट् का वध करना चाहता है ?

असोक (मुस्कराकर) कोई नहीं कोई नहीं महामात्य।

विष्णुगुप्त चाणक्य के शिष्य को इस प्रकार बरना शोभा नहीं देता। राजकुमारी मनुष्य का वध करने की एक नई रीति जानती हैं। वह मर जाता है पर उसके प्राण नहीं निकलते। धायव तुम्हें बिखास नहीं आ रहा है। पर भा जायगा। अब तो हम बच रहे हैं। आओ राजकुमारी ! आओ देवी कारुणाकी ! तुम भी आओ प्रभाव होनेवाला है। बंदीगृह में एक नव प्रभाव होने दो।

(सम्राट् शीघ्रता से रंगमंच से बाहर जाते हैं। महारानो के साथ राजकुमारी भी उसी दृढ़ता से जाती हैं। राघा गुप्त सबसे पीछे कुछ लोया-लोया-सा जाता है।)

राघागुप्त समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है। सब

केवल विचित्र अभिप्रेतसमीप अव्युक्त

(जाता है और परवा पिर जाता है)

## तीसरा अंक

(रामसभ पर रात्रि का सहन अथकार । रह रह कर पहल्वे  
 को पुकार उठती है । मंघ पर एक ओर बीपक का मंघ प्रकाश  
 हो रहा है । मानो वह वहां सिमिट गया है । कुछ क्षण  
 बाद उस प्रकाश में एक छाया उभरती दिखाई देती है । वह  
 एक मुस्क की छाया है जो एक शिखा पर मौन बठा हुआ  
 रिमो गहरो पिछारघारा में निमग्न है । उसके दारोरे की छाया  
 लड़की की एक मूर्ति पर ऐसे पड़ रही है जैसे किसी कुशल बिज्र  
 कार में विन्वाय को बिज्रित किया हो । वह कलिंग का राजकुमार  
 है और अगोक की आशा से बबोगूह में मूरपु की राह देज रहा  
 है । इसी समय एक ओर से राजकुमारी संपमित्रा और उसके  
 पौध बबोगूह का घातक घडगिरि वहां आते हैं । राजकुमारी ने  
 निरस पर तक एक बाला बस्त्र पहना है । उसकी बाल स्थिर है  
 पर उसके नयन कमकते हैं । घडगिरि का पिछाल दारोरे उसकी  
 बड़ी-बड़ी भूधें और हाथ की बड़ी कटार मम म भय पडा करती  
 है । आकर दोनों रामसभ के प्रवेग-द्वार पर दह जाते हैं ।  
 राजकुमारी मुड़ती है ।)

संपमित्रा तुम वहीं बाहर ठहरो घडगिरि ।

कर्मिण की राजकुमारी हैं। मेरा वध करने के लिए मिझुणी बनी थी और मैं समझता हूँ इन्हें काफी सफलता मिली है।

राधागुप्त (चकित) क्या क्या कहते हैं सम्राट्। (कटार खींचता है) कौन है जो सम्राट् का वध करना चाहता है ?

अशोक (मुस्कराकर) कोई नहीं कोई नहीं महामात्य।

विष्णुगुप्त आणव्य के शिष्य को इस प्रकार डरना छोड़ा नहीं देता। राजकुमारी मनुष्य का वध करने की एक नई रीति जानती हैं। वह मर जाता है पर उसके प्राण नहीं निकसते। शायद तुम्हें विश्वास नहीं आ रहा है। पर आ जायगा। अब तो हम बस रहे हैं। भागो राजकुमारी ! भागो देवी कारुणाकी ! तुम भी भागो प्रभाव होनेवासा है। घंटीगृह में एक नव प्रभाव होने दो।

(सम्राट् शीघ्रता से रंगमंच से बाहर जाते हैं। महारानी के साथ राजकुमारी भी उसी बुझता से जाती हैं। राधा गुप्त सबसे पीछे कुछ झोया-झोया-सा जाता है।)

राधागुप्त समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है। सब केसु बिचित्र अभिषेकसनीय प्रभुभूत

(जाता है और परदा गिर जाता है)

मिर है ।

बंमिरि प्रच्छा देवि ! मैं बाहर उहरता हूँ लेकिन ध्यान  
रगिए कि उपा की प्रथम निरण के उदय होने से पूर्व  
भापको कैसे जाना होगा ।

संपमित्रा जानती है ।

(जाता है । संपमित्रा एक दाल उसे जाते देखती है । फिर  
राजकुमार की ओर मुड़ती है पर आग नहीं बढ़ती, वहाँ  
झड़ी-सड़ी बीर्य निवास सेतो है ।)

संपमित्रा (स्वमत—एक बीर्य निवास सेकर) यह सब क्या  
है ? यह इतना भावपूर्ण क्यों है ? हृदय में यह घड़वन  
कसी है ? यह स्पंदन किमका है ? (उच्छ्वसित स्वर) क्या  
प्रेम का ? (विचित्र ऊँचा स्वर) क्या मैं सप्तमुख राज  
कुमार से प्रेम करता हूँ ? क्या मैं सप्तमुख उगे बचाना  
चाहती हूँ ? क्या उसे बचाना ठीक है वह जानू है । वह  
मेरे भाई मेरे दग मेरे सम्भाट का जानू है—नय हाँ वह  
जानू है । मैं जानू से प्रेम करती हूँ । मेरे दग का जानू मेरे  
हृदय निहासम पर था बठा है । बाह—पर—पर जानू हुआ  
तो क्या ? वह धीर है वह निर्भीक है वह मुक्त है । अभी  
उसी दिन जब दगका हाथी मगध की सेना में घग गया था  
तो वह बाई की तरफ पटता बसो गई थी । बार-बार  
प्रमग्य समिर्को म उग घेरने की कोशिश की पर उमर  
दगपासी धाराही ने दारवृष्टि म गवरो बटिन कर लिया ।  
तब ब तेमे सगल मे जैसे देव-मेमापनि कुमार काशिराय पुंड

चाहती हूँ ।

चंडगिरि परंतु बेबि ! सम्राट् की आज्ञा है कि-

सधमित्रा सम्राट् की आज्ञा मैं जानती हूँ चंडगिरि ! और यह भी जानती हूँ कि तुमपर बिश्वास किया जा सकता है । कुमार लया मांग लें तो सम्राट् उन्हें मुक्त करने को तैयार हैं । मैं चाहती हूँ कि उन्हें

चंडगिरि बेबि यह सब ठीक है लेकिन मेरा कर्तव्य मुझसे कहता है कि-

सधमित्रा (विमर्श से) चंडगिरि ! मुझे राजकुमार से बहुत आवश्यक बातें करनी हैं । मैं चाहती हूँ कि मिश्रु उपगुप्त के जाने से पूर्व उन्हें समाप्त कर लूँ ।

चंडगिरि (अकित) क्या मिश्रु उपगुप्त यहाँ धायेंगे ।

सधमित्रा हाँ चंडगिरि ! वह सम्राट् से आज्ञा लेने गये हैं ।

चंडगिरि सम्राट् उन्हें आज्ञा देंगे ? एक मिश्रु को यहाँ जाने की आज्ञा देंगे ? असंभव एकदम असंभव ।

सधमित्रा असंभव नहीं चंडगिरि । उन्हें आज्ञा मिलेगी ।

सम्राट् जो न कर सके उसे वह करना चाहते हैं । जाओ उनकी राह देखो ।

(चंडगिरि सहसा कुछ उत्तर न देकर धूम्र में निहारता है ।)

सधमित्रा (विमर्श स्वर) जाओ चंडगिरि ।

चंडगिरि (एकदम) जाऊँ भण्डा जाता हूँ राजकुमारी ।

लेकिन वह तो स्थिर है ।

सधमित्रा जबतक सम्राट् दूसरी आज्ञा न भेजें तबतक वह

स्विर है ।

बहिरि प्रपच्छा देवि । मैं बाहुर ठहरता हूँ लेकिन ध्यान  
रगिए कि उपा की प्रथम किरण के उदय होने से पूर्व  
मानको जैसे जाना होगा ।

संप्रमित्रा जामती हूँ ।

(जाता है । संप्रमित्रा एक क्षण उसे जाते देखती है । फिर  
राजकुमार की ओर मुड़ती है पर घाने नहीं बढ़ती, वहाँ  
झड़ी-झड़ी बीध निवास भेती है ।)

संप्रमित्रा (स्वमत—एक बीध निवास लेकर) यह सब क्या  
है ? यह इतना आश्चर्य क्यों है ? हृदय में यह प्रह्वन  
क्यों है ? यह स्पंदन किसका है ? (उच्छ्वसित स्वर) क्या  
प्रेम का ? (किंचित ऊँचा स्वर) क्या मैं सचमुच राज  
कुमार से प्रेम करती हूँ ? क्या मैं सचमुच उसे बचाना  
चाहती हूँ ? क्या उसे बचाना ठीक है वह जानु है । वह  
मेरे भाई मेरे देव मेरे सम्राट् का जानु है—जानु हाँ वह  
जानु है । मैं जानु से प्रेम करता हूँ । मेरे देव का जानु मेरे  
हृत्प मिहासम पर आ बठा है । आह पर पर जानु हुआ  
तो क्या ? वह खीर है वह निर्भीक है वह मुपर है । अभी  
जमी निम जब दसना लायी मगध की मेमा में घग गया था  
तो वह कोई की तरह पटती अतो गई थी । बार-बार  
मगध सैनिका ने उसे घेरने की कोशिश की पर उमरे—  
घनघारी घारोही ने दारवृष्टि में गवनो बटिन कर निभा ।  
तब ब तेग सगध ये जैसे दय-मेनापति बुभार कार्तिकेय



कर रहे हों। स्वयं सम्राट् ने एक दिन उनके शौर्य की प्रशंसा की थी और आज भी वह ऊपर से बितने कठोर है मीतर से उठने ही तस्त है। उन्होंने मुझसे पूछा था—जमा भस्त्र के प्रतिरिक्त किसीका भय करने की कोई और भी रीति होती है ? यह बताता है कि वह आसक्ति हो रहे हैं और उनका अतर्मेन कुमार को समा करने का मार्ग बूझ रहा है। मैं वहीं मार्ग उन्हें सुझाऊँगी और कुमार की रक्षा करूँगी। लेकिन...लेकिन कुमार नहीं नहीं धन मैं कुछ नहीं छोडूँगी। समय बहुत कम है और मुझे कुमार को समा स्वीकार करने के लिए भना मेना है।

(वह सोचता से आगे बढ़कर मध के उस ओर जाती है जहाँ दीपक के मध प्रकाश में कुमार बिचार-मग्न बैठा है। आहट पाकर वह चौंकता है।)

कुमार कौन ? जङ्गल ! क्या समय हो गया ?

संधमित्रा (मौन रहती है।)

कुमार बोलते नहीं ? कौन है ? (उठता है और राजकुमारी को कोई नारी समझकर स्तम्भित रह जाता है।) कोई नारी ! इस समय ? यहाँ ? कौन हैं आप ?

संधमित्रा (मौन रहती है।)

कुमार आप बोलती नहीं। (पास आता है। ध्यान से राजकुमारी को देखता है और कांपकर पीछे हट जाता है।) आप राजकुमारी संधमित्रा ! आप आई हैं। समझ !

संधमित्रा (पूर्वत मौन)

कमार भाई हैं तो घाप खोसती क्यों नहीं ?  
संधमित्रा (मौन)

कमार घायद रंगे से कोई भूषण हो गई है। मोह समझ!  
मैं दबी को प्रणाम करता हूँ। बंदी कसिग-कुमार  
देवी संधमित्रा को प्रणाम करता है। (हाथ जोड़कर प्रणाम  
करता है) पधारित, आपने बंदीगृह में घाने का कैसे साहस  
किया। भाई जो मुझ भूमि में नहीं कर सका वह क्या  
बदल बंदीगृह में करने भाई है।

संधमित्रा (घोरे-स घाग बढ़कर) मुझे प्रसन्नता है कि कुमार  
मुझे भूमि नहीं है।

कुमार (हसकर) देवि। कसिग-कुमार को स्मृति इतनी दीए  
नहीं है कि वह अपने दातु को भी भूमि जाय।

संधमित्रा (कांपकर) दातु। मैं आपसी दातु है।

कुमार कसिग की भूमि को कसिग-पुत्रा कर रक्त से व्यापित  
करनमान धरयाचारी धर्मोत्तम को वहन दातु नहीं तो क्या  
हो सकती है ?

संधमित्रा (बुझकर) हो सकती है।

कुमार (अकित) हो सकती है ?

संधमित्रा हाँ।

कुमार देवि। दातु पुरानी बातें या कर रही है।

संधमित्रा बातें कभी पुरानी न होनी कुमार ! स्मृति उन्हें  
सादा नया रंगी है।

कुमार परतु बातें पुरानी न होने पर भी उनका प्रभाव बदल

कर रहे हों। स्वयं सम्राट् ने एक दिन उनके सौम की प्रशंसा की थी और आज भी वह उमर से जितने कठोर हैं भीतर से उठने ही जस्त हैं। उन्होंने मुझसे पूछा था—ज्या शस्त्र के प्रतिरिक्त किसीका धन करने की कोई और भी रीति होती है? यह बताता है कि वह आसक्ति हो रहे हैं और उनका अंतर्मन कुमार को लमा करने का मार्ग ढूँढ़ रहा है। मैं वहीं मार्ग उन्हें सुझाऊँगी और कुमार की रक्षा करूँगी। लेकिन—लेकिन कुमार नहीं—नहीं अब मैं कुछ नहीं सोचूँगी। समय बहुत कम है और मुझे कुमार को लमा स्वीकार करने के लिए मना सेना है।

(वह क्षोभता से आगे बढ़कर मंच के उस ओर जाती है जहाँ दीपक के ज्वर प्रकाश में कुमार विचार-भग्न बैठा है। आहत पाकर वह चीकता है।)

कुमार कौन? जङ्गलिरि! क्या समय हो गया?

सधमित्रा (मौन रहती है।)

कुमार बोलते नहीं? कौन है? (उठता है और राजकुमारी को कोई नारी समझकर स्तब्ध रह जाता है।) कोई नारी! इस समय? यहाँ? कौन हैं आप?

सधमित्रा (मौन रहती है।)

कुमार आप बोलती नहीं। (पास जाता है। ध्यान से राजकुमारी को देखता है और कांपकर पीछे हट जाता है।) आप—राजकुमारी सधमित्रा! आप आई हैं। समझ!

सधमित्रा (पूर्वत मौन)

कुमार धाई हैं तो आप बोलती क्यों नहीं ?

सधमित्रा (मौन)

कपल दायद यंत्रों से कोई धुपटा हो गई है । ओह सम्झा ! मैं देवी को प्रणाम करना भूल गया । खदी कलिंग-कुमार देवी सधमित्रा को प्रणाम करता है । (हाथ जोड़कर प्रणाम करता है) पधारिए, आपने बंड़ीगृह में धाने का कसे साहस किया ।—भाई जो कुछ भूमि में नहीं कर सका वह क्या बहन बंड़ीगृह में करने धाई है ।

सधमित्रा (धीरे-से आग बढ़कर) मुझे प्रसन्नता है कि कुमार मुझे भूसे नहीं हैं ।

कुमार (हँसकर) देवि । कलिंग-कुमार की स्मृति इतनी दीर्घ नहीं है कि वह अपने धनु को भी भूल जाय ।

सधमित्रा (जाँचकर) धनु ! मैं आपकी धनु हूँ ।

कुमार कलिंग की भूमि को कलिंग-धुरों के रक्त से प्लावित करनेवाले अत्याचारी अशोक की बहन धनु नहीं तो क्या हो सकती है ?

सधमित्रा (बुढ़स्यर) हो सकती है ।

कुमार (चबित्त) हो सकती है ?

सधमित्रा हाँ ।

कुमार दवि ! दायद पुरानी बातें याद कर रहो हैं ।

सधमित्रा बातें कभी पुरानी नहीं होतीं कुमार ! स्मृति मदा गया रहती है ।

कुमार परंतु बातें पुरानी न होमै पर भी उनका

जाता है, देख !

सधमित्रा नहीं कुमार प्रभाव भी नहीं बदलता । वह केवल अपने से अधिक शक्तिशाली प्रभाव के पीछे छिप जाता है ।  
कुमार (हँसकर) शब्दों का यह मायाजाल नारी को ही शोभा देता है राजकुमारी !

सधमित्रा (पास आकर) शब्दों का मायाजाल ! कुमार ! शब्दों का यह मायाजाल भावना की भिलि पर चढ़ा है । कुछ देर पहले तुमने मेरा से कहा था—वस यही तुम्हारी बीरता है यहो तुम्हारा शौच है इसो बल पर सम्राट् बने हो एक बगीचा का सिर नहीं झुका सके । जो पक्षियाँ ठुकराने के लिए तो अनेक गोखड़ बगिचान में घूमा करते हैं । लेकिन वह बीर पुरुष का मार्ग नहीं है । इस सुंदर शब्द जाल के पीछे भी भावना की शक्ति थी ।

कुमार नहीं राजकुमारी सधमित्रा ! उन शब्दों के पीछे भावना नहीं नम्र सत्य था ।

सधमित्रा कुमार ! भ्रष्टा स्वयं जीव नहीं होता पर उसके अंतर में जीव समाया रहता है । नम्र सत्य और भावना की यही स्थिति है । भावना मनुष्य की वह शक्ति है जो उसे कभी कसाँठ नहीं होने देती ।

कुमार (हँसता है) देखता हूँ देखी सधमित्रा ने भी अपने भाई की भाँति न हारने का प्रण किया हुआ है ।

सधमित्रा मैं प्रण में विश्वास नहीं करती । मैं उत्तर चाहती हूँ ।

कुमार (समार शांति स्वर) उत्तर देना चाह कठिन काम नहीं है देवि ! कठिन काम है प्रायश्चित्त करना और फिर तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि ब्रह्मा के पास उत्तर देने का भी समय नहीं है । उसका जीवन का धिया गिना हुई है ।

सपत्नित्रा (शांत) मैं उन्हीं धियों को सामा तोड़ने आई हूँ कुमार !

कुमार (चकित) उन धियों की सीमा तोड़ने आई हा ? मैं तुम्हारा प्राय नहीं समझ देवि !

सपत्नित्रा प्राय स्पष्ट है । मैं तुमसे तुम्हारे प्राणों का दान मांगन आई हूँ कुमार !

(बुढ़ रहना चाहकर भी कांप उठती है ।)

कुमार (चकित) मुमम । (अट्टहास करता है) मुझे पूर ! दबो तक की भांति नाट्य कला में प्रवीण जान पड़ती है । सभी अपने आई के पास न जाकर मेरे पास आई हैं ।

सपत्नित्रा (इसी तरह शांत) भया के पास जाकर क्या करती । वह प्राण से भासत है द नहीं मरते । द तुम ही मरते हो ।

(कुमार कांपता है पर दूसरे हो क्षण तोड़ हो उठता है)

कुमार (तोड़ स्वर) तो तुम कहना चाहती हो कि मैं तुम्हारे भया के पास जाकर क्षमा मांगूँ ? जगती धीमाता इती बार कहे ?

सपत्नित्रा (एकदम आकृत स्वर में) नदी नदी !

कहती । मैं यह कह ही नहीं सकती ।

कुमार तो क्या कहती हो ?

सधमित्रा मैं कहती हूँ कि सम्राट् यदि तुम्हारी मुक्ति का आदेश मेरे तो उसे धस्वीकार मत करना ।

कुमार (छात-सा) क्या 'क्या मगध का क्रूर सम्राट् मेरी मुक्ति का आदेश देगा ?

सधमित्रा बे सकता है ।

कुमार पर क्यों ? कैसे ?

सधमित्रा क्यों और कैसे की जानने की इतनी चिंता मत करो कुमार । मनुष्य कब क्या कर बैठेगा कौन जानता है । मगध-सम्राट् की मानसिक स्थिति इस समय ऐसी है कि मेरे कहने पर वह तुम्हें क्षमा कर सकते हैं ।

कुमार तुम्हारे कहने पर वह मुझे क्षमा कर सकते हैं । तुम्हारे कहने पर । तुम मेरी मुक्ति की प्रार्थना करोगी ?

सधमित्रा आज्ञा दो तो ।

कुमार पर क्यों ?

सधमित्रा क्यों !

कुमार हाँ तुम मेरी मुक्ति की प्रार्थना क्यों करना चाहती हो ? तुम मुझे क्यों बचाना चाहती हो ? क्यों-क्यों-

सधमित्रा (कोई-कोई) क्यों करना चाहती हूँ ? क्यों बचाना चाहती हूँ ? (धीरे-से) तुम नहीं जानते ?

कुमार शायद-शायद नहीं जानता । तभी तो पूछता हूँ ।

सधमित्रा (उच्छ्वसित स्वगत) नहीं जानते तभी पूछते हो ।





गई है। वह कह उठता है।)

कुमार राजकुमारी ! राजकुमारी ! तुम कहाँ हो ? तुम बोसती क्यों नहीं ? बोसो बोसो, तुम कहाँ हो ?

संधमित्रा (बाकर उर्लते स्वर में) कुमार ! मैं यहीं हूँ कुमार !

कुमार (घभी भी खोया-खोया) राजकुमारी ! तुम कहाँ बसी गई थीं ? यह सब क्या था। क्या था यह मायाजास ? कसी थी यह प्रणय-श्लासा ? किसने पैदा की यह प्रणय पिपासा ? राजकुमारी ! महानाश के समय भी तुम्हें यह प्रेम-सीसा सुहाती है।

संधमित्रा (तकपकर बुढ़ स्वर में) कुमार ! नारी जिसे एक बार प्यार करती है उसके हावों अपना रक्त उसीचा जाने पर भी वह उसे प्यार करती रहती है।

कुमार (कांपकर) राजकुमारी !

संधमित्रा (सहसा हँस पड़ती है) डर गए, कुमार ! डर गए।

कुमार हाँ कुमारी ! मैं डर गया। मुख सूनि में महाप्रसव देख कर भी जो नहीं डरा ! पिता को घुसुळित देखकर भी जिसने ग्राह तक नहीं की। भगवत् सभाद की मृकुटी भी जिसकी दृष्टि को नहीं झुका सकी वही कुमार इस क्षण डर गया।

संधमित्रा (हँसती हुई) भयंकर है कि कुमार वीर होकर डर गये ! क्या मैं जान सकती हूँ कि कुमार के इस डर का कारण क्या है ?

कुमार दया ?

संधमित्रा (कांपकर) दया ?

कुमार हां कुमारी ! मुझे डर है कि वहीं तुम्हारे प्रणय की वर्तमान स्थिति मेरी प्राणरक्षा का कारण न बने। तुम्हारा प्रेम मुझे पथ से विचलित न कर दे।

संधमित्रा (कांपकर) तो तो तुम जानते हो। तुम सब कुछ जानत हो। तुम्हें वे दिन याद हैं जब भगवत् के प्रसिद्धि के रूप में तुम मृगया खसने हमारे यहां आये थे। जब सम्राट् ने तुम्हारे हस्तसापव की प्रशंसा की थी और तुमने मर रूप की।

कुमार कसिग का कुमार कुछ भी होने से पहले पुरुष है राज कुमारी ! और पुरुष जो प्रशंसनीय है उसकी प्रशंसा करना अपना कर्तव्य समझन है।

संधमित्रा (समझकर) जानती हूं और तभी पूछती हूं कि यदि मेरा प्रणय तुम्हारी प्राण-रक्षा चाहता है तो इसमें सुरा क्या है।

कुमार प्रणय प्राणा की मिठा नहीं मांगा करता राजकुमारी ! भगवत् सम्राट् ने मेरा सिर बाट डालने की आज्ञा दी है। मैं उस आज्ञा का सम्मान करूंगा। कुछ दाय बाँ जब मनमोहिनी उपा जागरण का सगीत सम्पादनी हुई प्राण मान से उतरेगी तब उगीक साथ मेरी मृत्यु भी मेरा प्राणिमन करने आयगी। मेरी मृत्यु में ही मेरा बन्धन है। कसिग व महामाया की जेता में जब उसकी प्रकृति

श्रुतियों का सुहाग सिंदूर रक्त से धुस गया हो तो मैं तुम्हारी माँग में सिंदूर नहीं भर सकता। आज मेरी धारें तुम्हारा रूप देखने में प्रसक्त हैं। आज मेरे कान तुम्हारी प्रणय रागिनी सुनने के अयोध हैं।

संधमित्रा कुमार ! कुमार !!

(चंडगिरि का प्रवेश)

चंडगिरि देवि !

संधमित्रा कौन ! चंडगिरि तुम आ गये।

चंडगिरि हाँ देवि ! आपको बहुत बेर हो चुकी है।

संधमित्रा कोई आया ?

चंडगिरि नहीं देवि !

संधमित्रा तो अभी ठहरो

चंडगिरि देवि राजा की आज्ञा का उत्सर्जन हो रहा है।

संधमित्रा (बिचय) बोला बस बोला और, चंडगिरि ! बात अभी समझी है।

चंडगिरि देवी की जैसी आज्ञा !

(जाता है)

संधमित्रा (निश्वास) गया। उफ कुमार—

कुमार (व्यय) देवि संधमित्रा प्रणम के लिए इतना झुक सकती हैं ?

संधमित्रा (जोड़ छाकर) सक्षय प्राप्त करने के लिए कुछ भी करना चातुर्य कहलाता है कुमार !

कुमार (आवेश) पर मैं ऐसे चातुर्य से घृणा करता हूँ देवि !

मैं अपना मस्तक कभी नहीं झुका सकता कभी नहीं ।  
मैं मर सकता हूँ पर किसी की दया का भिखारी नहीं बन  
सकता ।

संप्रिया (गहरा निःवास) कुमार ! तभी तो मैं तुम्हें प्रेम  
करती हूँ ।

कुमार परन्तु कुमाँरी ! मैं मगध-भद्राद का बंदी हूँ । मुझे तुम  
में प्रेम करने का अधिकार नहीं है ।

संप्रिया (उसी तरह) कुमार मैं तुम्हें मुक्त करा सकती हूँ ।  
पभी इसी क्षण बग नवता हूँ ।

कुमार नहीं ! मैं मगध-भद्राद की दया नहीं चाहता । जो मेरे  
दंग का दुश्मन और मेरे पिता का हत्यारा है मैं उसकी  
दया नहीं चाहता । मेरे दारिद्र्य में जब सब प्राण हैं तब  
तब मैं उसकी दया स्वीकार नहीं करूँगा । मैं कसिग की  
बोरता को नसकित नहीं करूँगा ।

संप्रिया (शांत) दया नहीं कुमार ! वह दया गली है ।

कुमार दया नहीं तो क्या है ।

संप्रिया पञ्चात्ताप ।

कुमार पञ्चात्ताप ! (गहवा अदृष्टांत) गुरु । अत्याचारी  
पण्डित और पञ्चात्ताप ! नाग व दाता व धर्म । संप्रिया  
तुम क्या कह रही हो ?

संप्रिया मैं छेक कह रही हूँ कुमार ! तुम्हारे आने के बाद से  
सम्राट् पञ्चात्ताप की छाग में जल रहे हैं । तुम्हारे जन  
बाव्यों में उन्हें आलोचित कर दिया है । मैंने अद्विगिरि के

दुपतियों का सुहाग सिंदूर रक्त से धुल गया हो तो मैं तुम्हारी मांग में सिंदूर नहीं भर सकता। भाज मेरी माँसें तुम्हारा रूप देखने में अधस्त है। भाज मेरे कान तुम्हारी प्रणय राखिनी सुनने के अधोम्य है।

सधमित्रा कुमार ! कुमार ॥

(चंडगिरि का प्रवेश)

चंडगिरि देवि !

सधमित्रा कौन ! चंडगिरि तुम आ गये।

चंडगिरि हाँ देवि ! आपको बहुत देर हो चुकी है।

सधमित्रा कोई भ्रामा ?

चंडगिरि नहीं देवि।

सधमित्रा तो भ्रमी ठहरो

चंडगिरि देवि राजा की आज्ञा का उल्लंघन हो रहा है।

सधमित्रा (विनम्र) बोलो बस बोलो धीरे, चंडगिरि ! बात भ्रमी भ्रमूरी है।

चंडगिरि देवी की जैसी आज्ञा।

(जाता है)

सधमित्रा (निश्वास) गया। उफ कुमार

कुमार (ध्वंस) देवि सधमित्रा प्रणय के लिए इतना मुँह सकती है ?

सधमित्रा (बोठ छाकर) सकय प्राप्त करने के लिए कुछ भी करना चातुर्य कहसाता है कुमार !

कुमार (आवेश) पर मैं ऐसे चातुर्य से पूजा करता हूँ देवि !

मैं अपना मस्तक कभी नहीं झुका सकता, कभी नहीं ।  
मैं भर सकता हूँ पर किसी की दया का भिखारी नहीं बन  
सकता ।

सपमित्रा (गहरा निश्वास) कुमार ! सभी तो मैं तुम्हें प्रेम  
करती हूँ ।

कुमार परन्तु कुमारी ! मैं मगध-सम्राट् का बंदी हूँ । मुझे तुम  
म प्रेम करने का अधिकार नहीं है ।

सपमित्रा (उसी तरह) कुमार मैं तुम्हें मुक्त करा सकती हूँ ।  
कभी इसी क्षण करा सकती हूँ ।

कुमार नहीं ! मैं मगध-सम्राट् की दया नहीं चाहता । जो मेरे  
दम का दुश्मन और मेरे पिता का हत्यारा है म उसकी  
दया नहीं चाहता । मेरे शरीर में जब तक प्राण हैं तब  
तक मैं सन् की दया स्वीकार नहीं करूँगा । म कलिंग की  
शेरता को कमकित नहीं करूँगा !

जैश (आंत) दया नहीं कुमार ! वह दया नहीं है ।

नर दया नहीं तो क्या है ।

जैश पञ्चाक्षर !

नर पञ्चाक्षर ! (सहसा धट्टहास) गुरु । अत्याचारों  
को और पञ्चाक्षर ! नाग के दाँतों में प्रभुत ! सपमित्रा  
तुम्हें क्या कह रही हो ?

जैश मैं ही कह रही हूँ कुमार ! तुम्हारे आगे क बाद से  
सम्राट् पञ्चाक्षर की आग में जल रहे हैं । तुम्हारे जन  
गणों ने उन्हें आसोदित कर दिया है । मने बडगिरि से

## (चंडगिरि का प्रवेश)

चंडगिरि वेबि । सन्नाट की भासा पासल करने की बेसा भा  
पहुँची है ।

सचमित्रा (ध्याकुल) चंडगिरि । हो खण धीर । बस वे धाने  
ही वाले हैं ।

कुमार नहीं चंडगिरि अब किसी के धाने की प्रतीक्षा नहीं  
है । तुम यहीं ठहरो और सुनो वेबि सचमित्रा । मैं तुमसे  
प्रेम करता हूँ । अपने जीवन से बढ़कर प्रेम करता हूँ ।  
तुमसे भी अधिक मैं अपने वेष से प्रेम करता हूँ । उससे भी  
अधिक मैं मनुष्य से प्रेम करता हूँ । वही मनुष्य भाव सोया  
हुआ है । उसे जगान के लिए अभी धीर बलिदान की  
पकड़त है

सचमित्रा (टोककर) कुमार सुनो तो सुनो

कुमार मैं बहुत सुन चुका कुमारी ! अब तुम्हें सुनना है । सुन  
तो कसिंग-कुमार प्राणों से नहीं डरता नारी से नहीं  
डरता । सचमित्रा । यदि तुम सचमुच मुझसे प्रेम करती  
हो तो समझ लो कि तुम्हारा प्रियतम कसिंग के रक्ष्यज्ञ से  
अपने रक्त की पूर्णाहुति देकर उसे संपूर्ण करना चाहता  
है । और वह तुम्हें भी निमग्न देता है कि तुम भी इस  
यज्ञ में भाहुति दो अपने प्रणम का बलिदान करो, कसिंग  
नारियों के रोदन में अपना रोदन मिला दो जिससे धरती-  
मबर कांप उठें महानाथ पूर्ण हो जाय और महतिनिष्ठा  
के बाद स्या का उदय हो

(बेतता-बोसता वह सहसा बुज-से बने चंडगिरि की घोर बढ़ता है ।)

कुमार माफो चंडगिरि, कहां है तुम्हारी कटार । तुम्हारे हाथों में मेरे हाथों में कम शक्ति नहीं है ।

(चंडगिरि पागल-सा समझ ही नहीं पाता । बिजली-सी चौंघती है । कुमार कटार छीन लेता है । चंडगिरि घोर सपमित्रा आपकर बोझत हैं ।)

चंडगिरि कुमार, क्या करत हो ? मेरी कटार दो । मेरी कटार दो ।

सपमित्रा कुमार कुमार, कटार छोड़ दो । (बोनों कटार छीनना चाहते हैं पर उससे पूर्व कुमार उसे अपनी छाती में भोंक लेते हैं । राजकुमारी चौंघती है ।) माह कुमार कुमार ! तुमने क्या किया ? तुमने कटार छाती में मार दी । माह कोई है, चंडगिरि ।

(कटार निकालना चाहती है । कुमार रोकता है)

कुमार चंडगिरि चंडगिरि कटार निवास सो ।

चंडगिरि (कटार पींचता है घोर कुमार माह करता है) मैं जाता हूँ घोर सप्राह से कहता हूँ कि कुमार ने अपने हाथ से अपनी छाती में कटार भोंककर अपने प्राणों का मंत्र कर लिया (भागना चाहता है)

सपमित्रा (ध्यात) चंडगिरि ! कटार मुझे दो । यह कटार मुझे दत्त जायों ।

चंडगिरि (मुड़कर) राजकुमारी ! चंडगिरि इतना मर्त



पहुँचा तो सब कुछ समाप्त हो चुका था । कुमार ने आपकी दया स्वीकार नहीं की ।

अयोध्या (सहसा महेंद्र को देखकर) कुमार ने मेरी दया स्वीकार नहीं की ? (सहसा कुमार के पास बैठ जाता है) कुमार ! कुमार ! तुम जीत गये । मैं पराजित हो गया । तुम्हारी बहन ने ठीक कहा था कि तुम मेरी दया स्वीकार नहीं करोगे । कभी नहीं करोगे । तुमने सबकुछ वहीं किया ।

सधमित्रा (आँसों में आँसू भरे क्लिप्त) कुमार की बहन ! कहाँ है वह ? क्या वह आपके पास आई थी ? (सहसा राधागुप्त के साथ महारानी काष्ठाकी और भिक्षुणी बेलघारी राजकुमारी का प्रवेश । महारानी बुझी हैं और राजकुमारी के मुख पर अस्थिर कदम गमीरता है ।)

राधागुप्त इधर से महारानी ! इधर आइये ।

(वे सब वहाँ आते हैं जहाँ कुमार चिरनिद्रा में सोया है ।)

उन्हें देखकर सधमित्रा खड़ी हो जाती है ।)

अधमित्रा कौन भाभी और और कसिंग की राजकुमारी । काष्ठाकी हाँ कसिंग की राजकुमारी थी वही भाभी भिक्षुणी है लेकिन यह क्या हुआ, सधमित्रा ! तुम इतना भी नहीं कर सकी ।

सधमित्रा प्रेम के पाश से मानवता का पाश प्रबल निष्ठा भाभी ! कुमार ने सम्राट् को पराजित करने के लिए मारी का दर्प भूर कर डाला ।

राजकुमारी नहीं देखि सधमित्रा ! यह कुछ नहीं कुमार  
देवन बसिग का रक्त-यज्ञ संपूर्ण करना चाहते थे । और  
बहो उन्हेनि किया । रात्रि के बाद उषा जब अपने प्राणों  
का ज्वन कर डालती है तभी अस्मरण होता है ।

(बहते-बहते झिझुली बैरागी राजकुमारी घुटने टेककर  
कुमार के पास बैठना चाहती है । सहसा प्रेम का आवेग  
उमड़ता है । वह दोनों हाथों से कुमार को पकड़कर  
बीरवार कर उठती है) भैया भैया

(जब सहसा अशोक दोनों हाथों से मुह डककर पाछे हट  
जात है । जबकि राधागण और महेंद्र भी मुड़ते हैं ।  
सधमित्रा शीघ्रता से राजकुमारी को छाती से बिपका  
लेती है और रोता हुई कहती है ।)

सधमित्रा बहन बहन हम दाता मात्र दुस्मिनी है । हमें इस  
गांव का धन करना है । हमारे लोक में ही मानवता का  
बन्याग है ।

(भिल उपवपन फिर आगे आते हैं)

उपवपन नयागन व मार्ग पर लोक व मित्र स्थान नहीं है  
(प्रधानी ।

(राजकुमारी सहसा अपने को छड़ाकर उन्हे बैरागी है)

राजकुमारी (तीव्रता से) मैं मरी जानी नयागन का धन ।  
म मो अपने बहन । मैं राजकुमारी बनना चाहता हूँ ।  
मैं फिर माधारण मारी बनना चाहती हूँ । मैं शक्तिध  
मना चाहती हूँ । मैं बलिग व हम निमय महाना का

## उपसंहार

(पहले अंकवाला दृश्य । अशोक गंभीर मुद्रा में इपर-से-उपर, उपर-से-इपर झूल रहे हैं । बसे पास आकर देखें तो वह बहुत उद्विग्न है । रह-रहकर बह साके होकर शून्य में दृष्टि गड़ाकर बेसने लगते हैं । ठिर आप-ही-आप जोस बैठते हैं ।)

अशोक (स्वगत) क्या से क्या हो गया । पिछले दस दिन में यह क्या जो किसी कारण अचानक उमड़ पड़ी थी मुझे कहां से उड़ी । जैसे मैं अब तक बराबर कोई मयंकर स्वप्न देख रहा था 'मे' अपनेको जितना क्षमितावाली समझता था । मेरा नाम ही संसार को चास देनेवाला था । मैं साकार मय का पर हुमा यह कि अबसर आने पर मैं एक बंदी से अपनी आत्मा नहीं भगवा सका । दस दिन तक जिसने धरती को सुरदों और आयसों से भर दिया, जिसने इतनी हस्याए की कि उनकी गिनती तक नहीं हो सकती उसीने जब चाहा तो वह एक मनुष्य के प्राण नहीं बचा सका । (ऊपर देखकर) मैं एक व्यक्ति के प्राण नहीं बचा

मका । उस एक ने उसे मेरे सक्तिशाली जीवन को भुन-  
भोर दिया । उसने मुझे चुनौती दी—तू सक्तिशाली नहीं  
सोपड़ी ठुठ्ठानेवाला गीदड़ है । गीदड़ (कातर भाव)  
गीदड़ मैं गीदड़ घोर घोर इससे भी भ्रमरजवाली  
बात तो यह है कि मैं इस चुनौती को झुठला नहीं सका ।  
उस्ता यह ज्ञान मुझे मया माग मुसमानेवाला बन गया ।  
देसते-देसते जैसे भ्रमर स्वप्नवासी रात घोल गई ।  
उज्ज्वल प्रभात था पटुषा । कर्त्तब धुस गया, मेरी  
धारमा निमल होने लगी पर पर हाहाकार वह  
वाष्प भीत्कार वह असंख्य जीवित चिताओं से उठनेवाली  
सतप्त भाहें वह गंधहरों से उठती उस्तुमों की हू-हू  
घोर भमरादलों की ची-ची वह धाबाल बड़ वनिताओं  
के नेत्रों से बहती हुई ज्वाला वह बह क्या मुझे नई  
सृष्टि करने दगो । उसे भूमकर क्या मैं सब निर्माण कर  
सकूंगा (एक क्षण मौन रहकर) लेकिन भिद्यु बटते हैं—  
हां तुम सब निर्माण कर सोगे । तयागत का मार्ग उगी  
नय-निर्माण का संदेशवाहक है (भाषाबेग) तयागत का  
माग । धर्मिमा घोर मानबता का माग क्या मैं उगवर  
जम सवंगा ? क्या मैं प्रेम में दिग्विजय कर सकंगा ? कुछ  
ममम में गरी घाता क्या मरुदुध बं / जायगा (बटार  
सेकर) क्या मैं धम्म धम्म समाप्त हो जायंगे क्या मैं  
मपप मिट जायंगे ?

(महाराजी बाट्याही का

सहिता की शक्ति (प्रेम)	१३
सत्वावह-मीमांसा	३३
बुद्धबाणी (विद्योती हरि)	१
संत-सुभाषार ( )	११ •
संतबाणी (विद्योती हरि)	२
प्रार्थना	३
अवोध्याकाण्ड "	१
भागवत-धर्म (ह. उ.)	६३
धर्मार्थी अमलालाची	६३
स्वतंत्रता की ओर "	४
बापू के आश्रम में	१
मानवता के मरने (भाब)	१३
बापू (ब विज्ञान)	२
बप और स्वस्थ "	६३
बापू के पत्ने	१
अवोध्याकाण्ड "	२३
लौ और पुस्त (टोस्टॉव)	१
मेरी मुक्ति की कहानी	१३
प्रेम में मगलान "	१
जीवन-साधना "	१२३
कलबार की कलुष	३३
हमारे बमारे की गुलामी	७३
बुराई कैसे मिटे ? "	१
बालकों का विवेक "	३०
हम करें क्या ?	६३
धर्म और सदाचार	१२३
धर्म में सदाचार "	१३
कल्याण (बा अग्रवाल)	२
हिमालय की ओर में	२
साहित्य और जीवन	२
कर्म (य प्र पोहार)	१ •
राजनीति-प्रवेशिका (सोस्की)	१
जीवन-संदेश (ब विज्ञान)	१२३
प्रबोध के फल	३

सुभाष-बाबाचार	१२०
का का इतिहास (संक्षिप्त)	१ •
पंचवटी (धं म जेन)	१३
सप्तशती	२
रीड की हड्डी	१
अमिट रेखाएं	३
एक आदर्श महिला	१
राष्ट्रीय गीत	२३
तामिस-वेर (विस्मल्लुवर)	१३
बेटी-गाथाएं	१३
बुद्ध और बौद्ध साधक	१३
हमारे बाप की कहानी	१३
छात्र-भाषी की बेटी	
बेटी के साधन	१२३
फलों की बेटी	२३
पशुओं का इलाज (य प्र )	३
रामतीर्थ-संदेश (१ भाग)	११२
रांटी का सवाल (छोपा )	३
नवपुत्रों से दो बातें	• ६७
पुष्पार्थ (बा मगलानबास)	१
काश्मीर पर हमला	२
मिठाचार	३
भारतीय संस्कृति	३३
आधुनिक भारत	३
मैं तबुस्त हूँ वा बीमार ?	• ३
बांधीजी की सज्जाना में	२३
भागवत-कथा	३३
जय धर्मराज	१३
प्रगति के पथ पर (७ भाग)	२१
संस्कृत-साहित्य-सौरभ	
(३३ पुस्तकें) प्रति पुस्तक	३७
समाज-विकास-माना	
(११ पुस्तकें) प्रति पुस्तक	३७

